महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय

प्रकृति इतिहास उपविभाग प्रदर्शिका

489

रायपुर

१९६० ईस्वी : १८८१ शक

7089

प्रकृति इतिहास उपविभाग प्रदर्शिका

राजकीय संग्रहालय, लखनऊ
क्रम संख्या 489
प्राप्ति तिथि 13.5.60
विभाग ....
श्रेणी ....
STATE MUSEUM, LUCKNOW.

चित्रफलक एक

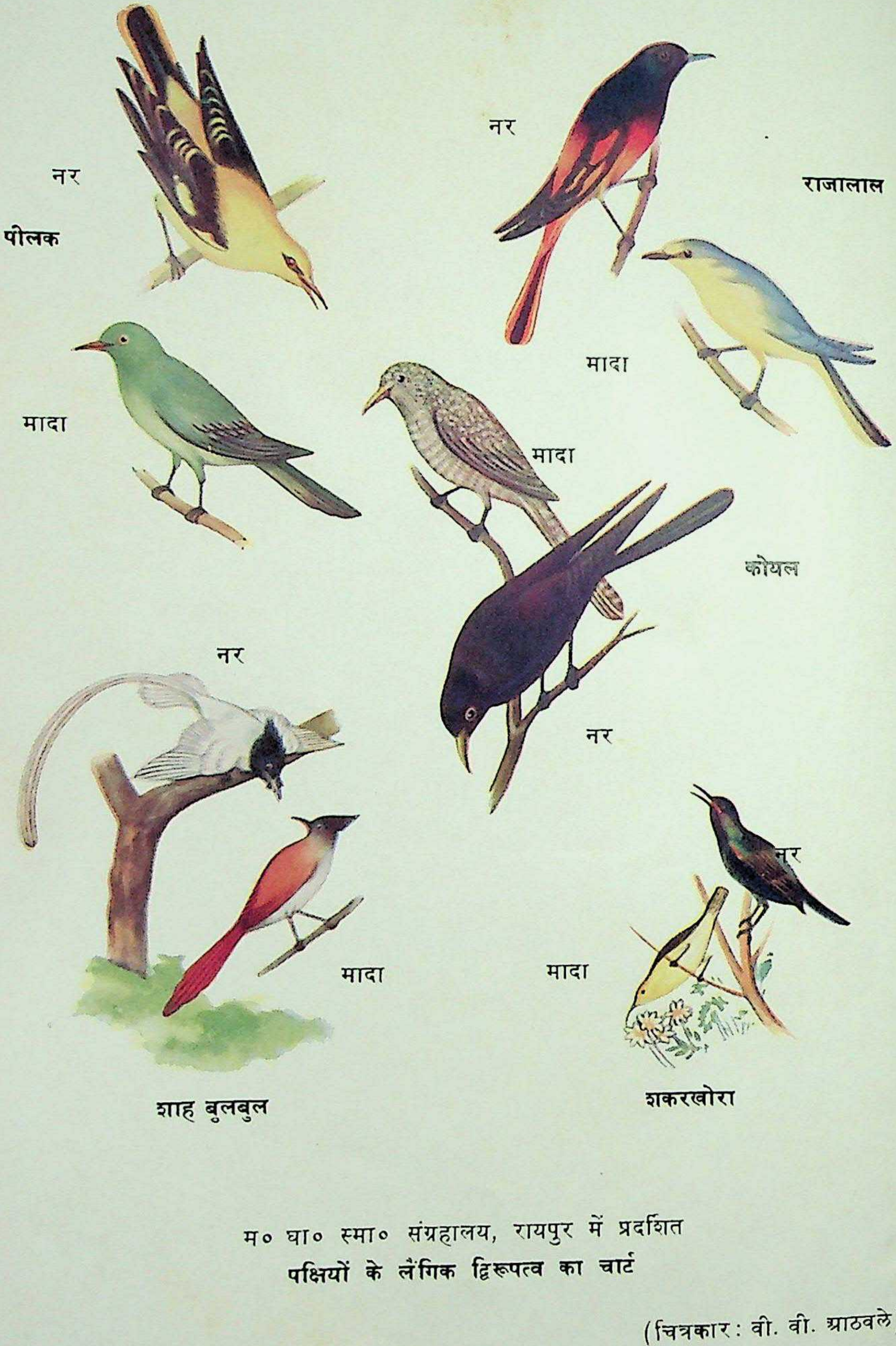

म० घा० स्मा० संग्रहालय, रायपुर में प्रदर्शित
पक्षियों के लैंगिक द्विरूपत्व का चार्ट

(चित्रकार : वी. वी. आठवले)

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय

प्रकृति इतिहास उपविभाग प्रदर्शिका

क्र० संख्या 489
13.5.60

रायपुर

१९६० ईस्वी : १८८१ शक

प्रकाशक—
सहायक संग्रहाध्यक्ष,
महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय,
रायपुर, मध्यप्रदेश ।

भारत शासन की वित्तीय सहायता से
सहायक संग्रहाध्यक्ष द्वारा संकलित और प्रकाशित

915.954

मुख्य छायाचित्रकार—
विरदी स्टूडियो रायपुर ।

ब्लाक निर्माता और मुद्रक—
सिंघई मौजीलाल एण्ड सन्स
जबलपुर ।

निवेदन

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर का प्रकृति-इतिहास उपविभाग है तो छोटा सा ही, किन्तु अन्य उपविभागों की अपेक्षा कहीं अधिक लोकप्रिय है। इसमें प्रदर्शित सामग्री शिक्षित और अशिक्षित तथा बालक और वयस्क आदि सभी प्रकार के दर्शकों का न केवल मनोरंजन ही करती है बल्कि प्रकृति-रचना की कौतूहल भरी विविधताओं के विषय में उनका ज्ञानवर्धन भी करती है।

संग्रहालय का प्रकृति-इतिहास उपविभाग अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। उसमें वनस्पति जगत का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाया है, अमेरुदण्डीय जीवों के समूहों की कमी है और मेरुदण्डीय जीवों में से भी इने गिने ही संग्रहीत हो सके हैं। किन्तु इस की उपयोगिता और लोकप्रियता को देखते हुये यह विश्वास किया जाता है कि यथासमय इस उपविभाग का विस्तार हो सकेगा।

प्रस्तुत प्रदर्शिका में संग्रहालय दीर्घा में प्रदर्शित जीवों के विकास तथा उनकी आदतों आदि के संबंध में जानकारी दी गई है; यथा-स्थान उसी श्रेणी, वर्ग या परिवार के अन्य जीवों का भी उल्लेख कर दिया गया है जिससे पुस्तिका की उपयोगिता बढ़ गई है। प्रदर्शिका तैयार करने में मैंने हिन्दी और अंग्रेजी के अनेक ग्रन्थों से सहायता ली है जिनमें श्री सुरेशसिंह लिखित 'जीवजगत' और श्री सलीम अली की 'बुक आफ इंडियन बर्डस' मुख्य हैं जिसके लिये मैं इन दोनों विद्वानों का कृतज्ञ हूं। रायपुर के विज्ञान महाविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डाक्टर आर० एन० सिंह ने प्रदर्शिका का प्रारूप पढ़कर अनेक उपयोगी सुझाव दिये; मैं उनका भी आभारी हूं। सुन्दर छाया चित्रों के लिये विरदी स्टूडियो रायपुर के श्री दिलीप विरदी और बढ़िया छपाई के लिये सिंघई मौजीलाल एण्ड सन्स, जबलपुर के श्री अमृतलाल परवार धन्यवादार्ह हैं। इन दोनों तंत्रज्ञों के श्रम और लगन के सुफल से यह पुस्तिका इतने अच्छे रूप में प्रस्तुत की जा रही है।

चित्रफलक दो और तेरह (ख) के लिये क्रमशः वार्डस, न्यूयार्क और टर्टोक्स, चिकागो का आभार स्वीकार करना प्रासंगिक है।

मुझे आशा है कि यह छोटी सी प्रदर्शिका दर्शकों के लिये उपयोगी होगी। विषय का अल्पज्ञ होने के कारण मुझसे जो भूलें हुई हों उनके लिये विशेषज्ञ जन मुझे क्षमा करेंगे और उन की सूचना मुझे देने की कृपा करेंगे ताकि भविष्य में उन का निवारण किया जा सके।

मार्च १९६० ईस्वी
फाल्गुन १८८१ शक

बालचन्द्र जैन
स० संग्रहाध्यक्ष

विषय-सूची

		पृष्ठ संख्या
एक	प्रकृति की कहानी	१
दो	जीव जगत	६
तीन	उभयचर श्रेणी	१०
चार	सरीसृप श्रेणी	१२
पांच	स्तनप्राणी श्रेणी	१६
छह	पक्षि-श्रेणी	२५
	सहायक ग्रन्थ	४३

चित्र-सूची

एक पक्षियों का लैंगिक द्विरूपत्व (तिरंगा मुखचित्र)

दो जीवजगत के संबंध

तीन अजगर

चार दुबाइया या कौड़िया सांप

पांच चीतल

छह कस्तूरी

सात क. ऊद
ख. साल

आठ क. पहाड़ी गिलहरी
ख. लोमड़ी और कौआ

नौ क. अंधा बगुला
ख. सारस

दस क. शाह बुलबुल
ख. हुदहुद

ग्यारह क. संग्रहालय में प्रदर्शित विभिन्न पक्षी
ख. बया का घोंसला

बारह गाने वाले भारतीय पक्षी

तेरह क. पीलक का जोड़ा
ख. भारतीय अजगर का ढांचा

प्रकृति इतिहास उपविभाग प्रदर्शिका

१—प्रकृति की कहानी

पृथ्वी का उद्भव

वैज्ञानिकों ने अनुमान किया है कि लगभग दो अरब वर्ष पूर्व हमारी पृथ्वी का सूर्य से विच्छेद हुआ था। उस समय वह जलते हुये वाष्पपुंज के रूप में थी। धीरे धीरे पृथ्वी का धरातल ठंडा हुआ जिसमें करोड़ों वर्ष लग गये। धरातल ठंडा हो चुकने पर भी पृथ्वी का भीतरी भाग तब भी धधक रहा था और वह कभी कभी लावा के रूप में उसकी सतह की पपड़ी को फोड़कर बाहर निकल पड़ता था। इस लावे ने ही पृथ्वी के स्थल भाग और समुद्र बनाये। लावे का जो भाग ऊपर आ कर ठंडा हो गया वह तो पृथ्वी का स्थल भाग बन गया और जहां वह धरातल को फोड़कर पुनः पृथ्वी के भीतर समा गया वहां का भाग गहरा हो जाने और कालान्तर में वहां पानी भर जाने के कारण समुद्र बन गये। पृथ्वी ज्यों ज्यों ठंडी पड़ती गई, उसकी उपरी सतह में सिकुड़नें पड़ती गई। ये ही सिकुड़नें आज पहाड़ों और घाटियों के रूप में देखी जाती हैं।

जीवन का प्रादुर्भाव

आदि काल में पृथ्वी पर जीवन का कोई चिह्न नहीं था और एक अरब वर्षों तक केवल प्राणहीन पदार्थों की ही उथल पुथल चलती रही। लेकिन जब पृथ्वी यथेष्ट ठंडी हो गई और प्राणहीन पदार्थों की उलट पुलट कम हो गई तो जीवों के उत्पन्न होने की संभावना हो गई। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि प्रारंभिक जीवाणु समुद्रों में पैदा हुये और इस प्रकार जीवन के अंकुर सर्वप्रथम प्रोटोप्लाज्म अथवा जीवपंक में दृष्टिगोचर हुये। प्रारंभिक जीवाणु एक-कोशीय जीव के रूप में विकसित हुये, इसके बाद संघवद्ध होकर वे अनेक-कोशीय जीवों के रूप में विकसित हुये।

प्रोटोप्लाज्म अथवा जीवपंक के छोटे छोटे समूह रूपी सूक्ष्म जीवकोशों से वनस्पति और जीवजन्तुओं का विकास हुआ। वह इस प्रकार कि उन सूक्ष्म जीव कोशों में से कुछ ने अपने चारों ओर सेलीलोस का आवरण चढ़ा लिया और अपने भीतर क्लोरोफिल नामक हरा पदार्थ पैदा किया। इस हरे पदार्थ ने सूर्य की शक्ति का उपयोग करके उस प्राणी के लिये कार्बन डाइआक्साइड को हवा और पानी की खुराकों में परिवर्तन कर दिया। क्लोरोफिल के कारण इन प्राणियों का रंग हरा हो गया। इन्हीं से विकसित होकर हमारे पेड़ पौधे बने।

किन्तु जिन जीवों ने सैलीलोस का आवरण धारण नहीं किया और उस प्रकार अपने भीतर क्लोरोफिल या पर्णहरित नहीं उत्पन्न किया, उनका शरीर विकसित होकर चलने फिरने लायक तो हो गया लेकिन वे वृक्षों की तरह कार्बन डाइआक्साइड को हवा और पानी में बदल न सके। तब फिर जीवन धारण करने के लिये उन्होंने हरे जीव कोशों को ही खाना प्रारंभ कर दिया। हरे जीवकोशों को खाने वाले इन जीवकोशों से ही संसार के सारे जीवजन्तुओं का विकास हुआ।

उपरोक्त प्राणी समुद्र में विकसित हो रहे थे। ५० करोड़ वर्ष पुराने फासिल से ज्ञात होता है कि उस समय तक अमेरुदण्डीय जीवों का विकास हो चुका था किन्तु मेरुदण्डीय जीवों का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था। समुद्री जीवों में ट्रिलोबाइट नामक जीव सबसे अधिक विकसित था। उसने बीस करोड़ वर्ष के बाद समुद्री पनबिछिया का स्वरूप ग्रहण किया। पनबिछिया भी बीस करोड़ वर्ष तक रहे। उनके बाद सात करोड़ वर्ष तक आस्ट्राकोडर्म याने कवचधारी मछलियां रहीं। उनकी एक शाखा से हमारी मछलियों का विकास हुआ। इन विकसित मछलियों के शरीर में मेरुदण्ड या रीढ़ की हड्डी का विकास हो जाने से जीवों की शरीर रचना में बिलकुल परिवर्तन ही हो गया।

मछलियों का राज्य

मछलियों ने अपना विकास करके न केवल रीढ़ की हड्डी प्राप्त की बल्कि उनके शरीर पर सुफनों (पक्षों) का भी विकास हुआ जिससे उन्हें पानी में इधर उधर तैरकर जाने में सुविधा हो गई। भोजन के लिये पानी में इधर उधर जाने की सुविधा प्राप्त हो जाने से ये मछलियां दिन पर दिन बढ़नें लगीं। समुद्रों में इनकी अनेक जातियों का विकास हुआ जिनमें से कुछ तो कोमल हड्डियों वाली थी और कुछ की हड्डियां कड़ी थी। कड़ी हड्डियों वाली मछलियों ने विकास की सीढ़ी पर एक और कदम रखा और उनमें से कुछ ने अपने शरीर में फेफड़ों का विकास कर लिया। फेफड़े मछलियों के लिये आवश्यक न थे किन्तु आगे मौका पड़ने पर उन्हीं ने मछलियों के जीवन की रक्षा की। अचानक प्रकृति में महान परिवर्तन हो गया और मौसम इतना खुश्क हो गया था कि पानी में प्राणवायु की अत्यन्त कमी हो गई। तब इन फेफड़ों की सहायता से मछलियां खुली हवा में सांस लेकर अपनी जीवन रक्षा कर सकीं थीं। लेकिन जब पुनः मौसम बदला और घोर वर्षा से पृथ्वी ओतप्रोत हो गई तथा पानी में प्राणवायु की कमी न रही तो मछलियों ने अपने गलफड़ों से पानी में घुली हुई हवा में सांस लेना प्रारम्भ कर दिया। अब उन के फेफड़े अनावश्यक थे। इसलिये वे हवा की थैली में बदल गये जिसमें हवा को भरकर और निकाल कर मछलियां पानी में ऊपर नीचे आती जाती हैं।

उभयचर प्राणी

समुद्रों में मछलियों के विकास के साथ धरातल पर वनस्पति का विकास प्रारंभ हो गया था। स्थल पर पौधे बिना पत्तियों और बिना जड़ों के फैलते जा रहे थे और एक समय

ऐसा आया जब इन्होंने पृथ्वी का काफी भाग घेर लिया था। इस प्रकार स्थल पर वानस्पतिक भोजन खूब हो गया। यह देख पानी के जीव धीरे धीरे स्थल की ओर बढ़ने लगे। जिन्होंने पहले स्थल पर आने की हिम्मत की वही प्राणी आज उभयचर कहे जाते हैं। ये उभयचर समान रूप से जल और थल दोनों स्थानों में रहने योग्य जीव थे। वे खुली हवा में सांस ले लेते थे और पानी में भी बहुत देर तक रह लेते थे। स्थल पर चलने फिरने के लिये इन के पैरों का भी विकास हो गया। कहा जाता है कि लगभग १० करोड़ वर्षों तक पृथ्वी पर इन उभयचर जीवों का ही बाहुल्य रहा किन्तु उसके बाद उन का संसार से लोप हो गया। हां, उनके कुछ वंशज, मेंढ़क आदि के रूप में आज भी देखे जाते हैं।

सरीसृप या रेंगने वाले जीव

समय परिवर्तन के अनुकूल अपने आप को बना लेने वाली जीवों की एक और शाखा क्रमशः अपना विकास कर रही थी। वह शाखा थी सरीसृपों की। ये उभयचर जीवों से काफी आगे बढ़ आये। इन्हें अण्डे देने के लिये पानी में नहीं जाना पड़ता था, अतः इनका संबंध पानी से और भी कम हो गया। इतना ही नहीं, इन्हें और भी सुविधाएं प्राप्त हो गई जैसे इनके पैर शरीर से सटे होने लगे और ये गले के बजाय अपनी पसलियों से सांस लेने लगे। रक्तसंचार की व्यवस्था भी इनके शरीर में पूर्ण हो गई। जिसे इतनी अधिक सुविधाएं एक साथ मिल जायें भला उनका क्या कहना। हुआ यह कि ये सरीसृप सारे भूमण्डल पर फैलने लगे और क्रमशः उसके स्वामी ही बन गये। इन सरीसृपों में से कई तो काफी बड़े थे। उन में से डाइनासोर सबसे प्रसिद्ध थे। डाइनासोर की अनेक जातियां थीं। डिप्लोडोकस नाम के प्रसिद्ध डाइनासोर की लम्बाई ९० फुट बताई जाती है। वह सुप्रसिद्ध जीव शाकाहारी था, यह आश्चर्य की बात नहीं है; हमारा आज का सबसे बड़ा प्राणी हाथी भी शाकाहारी ही है। दूसरा प्रसिद्ध डाइनासोर, ब्राकियोसोरस था। इसका वजन लगभग ५० टन होता था। तीसरे प्रकार का प्रसिद्ध डाइनासोर, टाइरनासरस था, वह बीस फुट ऊंचा मांसाहारी जीव था और उसके मुख में छह इंच लम्बे दांत थे, इत्यादि इत्यादि। ये भारी डीलडौल वाले प्राणी पृथ्वी पर लगभग १० करोड़ वर्ष राज करते रहे किन्तु मौसम के महान परिवर्तन के अनुकूल अपने को न बना पाने के कारण समाप्त हो गये।

पक्षी

उपरोक्त सरीसृपों के युग में ही एक प्रारंभिक सरीसृप जिसका नाम आर्कियोप्टेरिक्स या प्रत्नपुंखीय है, अपने शरीर को हल्का करके और अपने पंखों का विकास करके आकाश में उड़ने का प्रयत्न कर रहा था। प्रयत्न करने पर सफलता मिलती है; उसकी एक नयी शाखा से हमारे पक्षियों का विकास हुआ। इन पक्षियों की सबसे बड़ी विशेषता इनके पंख हैं। पंख की सहायता से पक्षी हवा में उड़ने लगे और पंखों ने ही उनके शरीर का तापमान एक जैसा रखने में मदद की। पक्षियों के संबंध में आगे विस्तार से कहा जायगा।

स्तनप्राणी

प्रारंभिक सरीसृप से जहां एक ओर तो पक्षियों की शाखा निकली, वहीं दूसरी ओर कुछ छोटे छोटे जीव दूसरे प्रकार से अपना विकास करने लगे। इन छोटे जीवों के चार पैर थे। उनका मुख्य भोजन मांस था। उनके शरीर का तापमान आसपास के हवा पानी के तापमान के साथ साथ घटता बढ़ता नहीं था बल्कि सभी अवस्थाओं में एक जैसा ही रहता था, इसलिये पक्षियों की भांति ये जीव गर्म खून वाले प्राणी कहलाते हैं। इन जीवों के शरीर पर बालों का विकास हुआ; उससे ये सर्दी से बचने लगे। ये अपने भ्रूण को अपने शरीर के भीतर ही रखने लगे और अण्डे के स्थान पर बच्चे जनने लगे। इतना ही नहीं, ये अपने स्तनों से अपने बच्चों को दूध पिलाते थे; इसलिये इन्हें स्तनप्राणी कहा जाता है। प्रारंभिक दिनों में तो ये अपना पेट, कीड़े-मकोड़ों आदि से भरते थे किन्तु कालान्तर में इन्होंने शाक-पात खाना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार स्तनप्राणी शाकाहारी और मांसाहारी दो श्रेणियों में बंट गये।

मानव

स्तनप्राणियों में सबसे अधिक विकास किया मनुष्य ने। किन्तु विकास की इस श्रेणी तक पहुंचने के लिये मानव को जो संघर्ष करना पड़ा उसमें उसे लगभग ५ करोड़ वर्ष लग गये। स्तनप्राणियों की जिस शाखा से मनुष्य का विकास हुआ, वे बहुत छोटे कद के जीव थे। उन के पैर भी छोटे थे। कद के छोटे होने पर भी वे जीव भागने और पेड़ों पर चढ़ने में बड़े कुशल थे। इन्हीं जीवों से विकसित होकर लेमूर, बन्दर, वनमानुष और मनुष्यों की शाखाएं निकलीं। पहले तो इनके चारों पैरों में से अगले दोनों पैर धीरे धीरे हाथों में बदल गये जिसके सहारे वे पेड़ों की डालियों को पकड़कर उन पर आसानी से चढ़ने और उतरने लगे। फिर इनकी दृष्टि का विकास हुआ और मस्तिष्क का भी। हिमयुग में मनुष्य पेड़ों पर से उतर कर जमीन पर चलने में समर्थ हुआ। उस युग में फल फूल का अभाव हो गया था सो अपने जीवन का अस्तित्व रखने के लिये मनुष्य को मांस खाना आरंभ करना पड़ा। अन्य जीवों का शिकार करने के लिये उसने लाठी और पत्थरों का सहारा लिया।

विकास की मंजिल पर

जंगलों को छोड़कर अब मनुष्य मैदानों में आगया। वहां उसे गाय, बैल, घोड़े, सुअर आदि जानवर काफी संख्या में मिल जाते थे। अपनी लाठी में नोकीले पत्थर लगाकर उन्हें बरछे का रूप देकर मनुष्य उनकी सहायता से शिकार करने लगा। इससे उसे शिकार में सहूलित हो गई। इस काल को मनुष्य का पूर्वप्रस्तर काल कहा जाता है। इस का समय २५००० ईस्वी पूर्व से १५००० ईस्वी पूर्व आंका गया है।

इसके पश्चात नवीन प्रस्तर युग आया। इसमें मनुष्य ने और भी उन्नति की। वह बीज बोकर खेती करने लगा। उसे इधर उधर घूमना छोड़कर एक स्थान पर बस जाना पड़ा।

इस प्रकार ग्रामों का निर्माण हुआ। जानवर भी पालतू रखे जाने लगे और अवकाश के समय में बर्तन, ऊनी कपड़े, चित्र आदि बनने लगे। आग की मदद से खाना पकाना भी इसी काल में मनुष्य ने सीखा। यह काल १५००० ईस्वी पूर्व से ३००० ईस्वी पूर्व तक का माना जाता है।

नवीन प्रस्तर काल के बाद कांस्य और ताम्र युग प्रारंभ हुआ जब मनुष्य ने पत्थर के स्थान पर कांसे और तांबे के हथियार बनाने का मार्ग ढूंढ़ निकाला। उसने पहिये का आविष्कार करके यातायात की सुविधा के लिये गाड़ी बनाई; मकान भी बनाये। लिपि और वर्णमाला का निर्माण भी इसी समय हुआ। कुछ समय बाद अर्थात आज से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व मनुष्य को लोहे का पता चल गया जो हथियारों के लिये कांसे या तांबे से अधिक कठोर और उपयुक्त था। लोहा मिल भी आसानी से जाता था। बस, इस समय से ही लौह युग का प्रारंभ होता है जो अभी तक चल रहा है।

२—जीव जगत

जीव के विशिष्ट गुण ये हैं:—

१ प्रचलन—चलने फिरने में समर्थ होना।

२ उद्दीप्यता—सर्दी, गर्मी, प्रकाश आदि अन्य उद्दीपनों के प्रभाव से परिवर्तन होना।

३ श्वसन—सांस लेना और छोड़ना।

४ पोषण—आहार ग्रहण करके शरीर का पोषण करना।

५ वृद्धि—प्रौढ़ावस्था प्राप्त होने तक शरीर बढ़ना।

६ उत्सर्जन—मलमूत्र त्यागना।

७ प्रजनन—अपनी आकृति की सन्तान उत्पन्न कर के वंशवृद्धि करना।

इस प्रकार उपरोक्त सजीवों के लक्षण से युक्त होने पर भी सजीवों को दो मुख्य विभागों में विभक्त किया गया है। १. पेड़-पौधे और २. जीवजन्तु। पेड़-पौधों की आकृति और आन्तरिक रचना जीवजन्तुओं से भिन्न होती है। उनके मस्तिष्क और हृदय जैसे अंग नहीं होते तथा उनकी गति भी सीमित रहती है। वे जीवजन्तुओं की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा सकते; एक ही स्थान पर रहकर बढ़ते रहते हैं। पेड़-पौधे ठोस भोजन नहीं ग्रहण कर सकते। उनके कोशों में सेल्यूलोस नामक पदार्थ से बनी एक कोशभित्ति होती है। उसमें क्लोरोफिल रहता है जो पेड़ पौधों के हरे रंग के लिये उत्तरदायी है। सजीवों के अन्य अक्षण इनमें होते हैं।

पेड़ पौधों की अनेक जात होती हैं। किन्तु अभी तक संग्रहालय में उनका संग्रह नहीं हो पाया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, पेड़ पौधे भी जीव हैं किन्तु उनका संसार अलग ही ढ़ंग का होने के कारण जीवजगत शब्द से जीवजन्तुओं के संसार का ही बोध होता है। यह जीवजगत बहुत बड़ा है। उसमें तरह तरह के जीव हैं। अतएव उनके अध्ययन में सुविधा लाने के लिये वैज्ञानिकों ने उनका वर्गीकरण किया है। यह वर्गीकरण जीवों के शरीर की रचना, व्यवहार, आहार तथा अन्य विशेष गुणों के आधार पर किया गया है। पहले जीवजगत के दो विभाग किये गये १. अमेरुदण्डीय उपजगत और २. मेरुदण्डीय उपजगत। फिर विभागों को श्रेणियों में, श्रेणियों को वर्गों में, वर्गों को परिवारों में और परिवारों को वंशों में विभक्त किया गया है और सुविधा के लिये वंशों को भी जातियों में बांटा गया है।

अमेरुदण्डीय उपजगत

इस उपजगत में उन सभी जीवों को रखा गया है जिनमें रीढ़ की हड्डी या मेरुदण्ड नहीं होता। यद्यपि संग्रहालय में अमेरुदण्डीय जीवों का अभी तक संग्रह नहीं हो सका है फिर भी यतः उनमें से बहुत से हमारे प्रति दिन के जीवन में देखने को मिलते हैं अतएव उनके विभिन्न विभागों का यहां संक्षेप में उल्लेख किया जाता है।

१ प्रजीव विभाग—इस में अमीबा जैसे एक कोशवाले जीव आते हैं। वे पानी अथवा अन्य जीवों के शरीर में रहते हैं। इनकी लगभग १०००० जातियां संसार में पाई जाती हैं।

२ छिद्रिष्ठ विभाग में सब प्रकार के स्पंज आते हैं। इनके शरीर में पानी के आने और जाने के लिये अनेक छेद रहते हैं। इनकी २५००० जातियां समुद्रों में पाई जाती हैं। स्पंज हमारे नहाने, चित्रकारी, सफाई तथा अन्य तरह के सैकड़ों काम आते हैं।

३ सुषिरान्त्रीय जीव विभाग में हाइड्रा, प्रवाल, जेली फिस, अनिलपुष्प आदि बहुकोशीय जीव हैं। इनकी लगभग ७००० हजार जातियां समुद्रों में पाई जाती हैं। इनमें से प्रवाल याने मूंगे से हम लोग खूब परिचित हैं। प्रवाल की डालियों के टुकड़े काटकर उन्हें सुडौल बनाकर गुरिया बनाई जाती हैं।

४ गंडूपद जीव विभाग में केंचुआ, जोंक आदि लगभग ४००० जाति के जीव हैं। इनमें से केंचुआ जमीन को पोली करके बाग बगीचों को फायदा पहुंचाते हैं। जोंक रक्त चूसने के लिये प्रसिद्ध हैं।

५ चिपिट कृमि विभाग में कद्दूदाना आदि ४५०० किस्म के जीव आते हैं। कद्दूदाना फीते के समान चपटा जीव है। वह आदमियों के पेट की अंतड़ियों में चिपक कर खाये हुये भोजन का अधिकांश रस चूस लेते हैं जिससे आदमी दुर्बल होता जाता है।

६ सूत्रकृमि विभाग में लगभग १६००० किस्म के जीव हैं। इनमें हमारा सुपरिचित मलसर्प भी आता है जो प्रति वर्ष हजारों मनुष्यों की जान लेता है। मलसर्प अंतड़ियों को अपना निवास बनाकर हमारे स्वास्थ्य को नष्ट करता है। वह फेफड़ों में छेदकर उसमें घुसता है जिससे आदमियों को निमोनिया का शिकार होना पड़ता है।

७ कंटकित त्वच जीव विभाग में तारामछली, जलसाही आदि जीव हैं जिनके शरीर की खाल कांटेदार होती हैं। ये प्रायः समुद्रों में पाये जाते हैं

८ कोशस्थ जीव विभाग में सीपी, कौड़ी, घोंघे, शंख, अष्टबाहु, आदि जीव हैं जिनका कोमल शरीर कड़े खोल के अंदर सुरक्षित रहता है। इनमें से बहुतों से हम अच्छी तरह परिचित हैं। मुक्तासीप में बहुमूल्य मोती मिलते हैं।

९ संधिपाद जीव विभाग में कीट, पतंग, शतपदी, सहस्रपदी, मकड़ी, बिच्छू, आदि लगभग ७ लाख जातियों के प्राणी आते हैं। शतपदी का नमूना हमारी गोजर है और सहस्रपदी का गिजाई। इस विभाग के जीवों में से अधिकतर हमारे लिये हानिकारक हैं जैसे टिड्डी दल हमारे देखते देखते हजारों एकड़ तैयार फसल को साफ कर देते हैं। दीमक, चींटी, पिस्सू, मक्खी, मच्छर के करतब भी हम जानते ही हैं। किन्तु दूसरी ओर मधुमक्खी से हमें शहद मिलता है और उसी प्रकार रेशम के कीड़ों से वस्त्र। कीड़े-मकोड़ों का शरीर तीन भागों में विभाजित रहता है, सिर, वक्ष और उदर। उनके शरीर का ढांचा भीतर न होकर कड़े खोल की शकल में ऊपर रहता है। इनकी इंद्रियों की बनावट भी विचित्र है। तेज उड़ने वाले कीड़ों की आंख की बनावट बर्र के छत्ते की भांति होती है। उसमें एक के बजाय छोटी छोटी सैकड़ों पुतलियां जड़ी रहती हैं। कीड़ों के कान तो होते हैं पर कभी धड़ में, कभी पेट में और कभी टांगों में रहते हैं। सूंघने का काम मूंछें करती हैं।

मेरुदण्डीय उपजगत

मेरुदण्डीय उपजगत में उन सभी जीवों को सम्मिलित किया गया है जिनके शरीर में रीढ़ की हड्डी या मेरुदण्ड रहता है। इन जीवों का विकास बिना मेरुदण्ड के जीवों के बाद हुआ। अमेरुदण्डीय और मेरुदण्डीय जीवों के बीच के कुछ ऐसे जीव भी हैं जो उन दोनों के बीच की कड़ी हैं। उनके शरीर में एक कठोर शलाका सा नोटोकार्ड रहता है जो मेरुदण्ड का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है। इस प्रकार का सबसे विख्यात प्राणी ऐम्फीआक्सस है जो समुद्र के छिछले पानी में रहता है।

मेरुपृष्ठीय जीवों की ये विशेषताएं हैं :—

१ इन जीवों के शरीर में पूर्ण विकसित मेरुदण्ड होता है जो अनेक टुकड़ों के मिलने से बनता है।

२ इनके शरीर के भीतर कड़ी हड्डियों का कंकाल होता है।

३ इनका हृदय शरीर के निचले भाग में होता है।

४ इनके उपांगों में केवल दो जोड़े होते हैं जो मछलियों में वक्षःपक्ष तथा अधःपक्ष के रूप में देखे जाते हैं।

५ इनके पृष्ठ भाग में चेतनारज्जु यान नर्व कार्ड रहती है जिसका अगला सिरा फैलकर इनके मस्तिष्क का निर्माण करता है।

६ इनका सिर तथा उसके अवयव भी स्पष्ट रहते हैं।

७ इनके दोनों जबड़ों के बीच एक कोरसंधि रहती है जिससे ये अपना मुख खोल और बंद कर सकते हैं।

८ इनमें हीमोग्लोबिन सदैव रुधिर कोशाओं में मिलता है।

मत्स्य श्रेणी

मेरुदण्डीय जीवों में मत्स्य श्रेणी के जीव प्रारंभिक हैं। यद्यपि इन जीवों के नमूने संग्रहालय की दीर्घाओं में संग्रह नहीं किये जा सके हैं, फिर भी उनकी विशेषताओं के संबंध में संक्षेप में जान लेना आवश्यक है। मछलियों की सबसे बड़ी विशेषता है उनका अपने गलफड़ों से सांस लेना। वे पानी में घुली हुई आक्सीजन से ही सांस लेती हैं। पानी से बाहर निकाले जाने पर उनका दम घुटने लगता है जिस प्रकार पानी के भीतर हमारा दम घुटता है। मछलियों के गरदन नहीं होती। उनका सिर और धड़ एक ही में मिला रहता है, मछलियां अपनी पखनियां या सुफनों के सहारे पानी में इधर उधर चलती फिरती हैं। वे पलक नहीं भांजती क्योंकि उनकी आंखों पर पलकें नहीं होती। पानी के बाहर होते ही मछलियां कुछ नहीं देख सकती और पानी में भी उनको ज्यादा दूर की चीज नहीं दिखाई पड़ती। सुनने का तरीका यह है कि ध्वनि की लहरें पानी के जरिये उनके कान के भीतरी हिस्से में पहुंचकर उन्हें आवाज की खबर दे देती हैं। मछलियों के कान का बाहिरी भाग नहीं रहता। उनकी सूंघने की शक्ति भी बहुत क्षीण होती है।

मछलियां शाकाहारी भी होती हैं और मांसाहारी भी। रंगीन मछलियां अधिकतर शाकाहारी होती हैं और दांतवाली मछलियां केवल मांसाहार करती हैं। मछलियों की हजारों किस्में समुद्र और मीठे जलाशयों में पाई जाती हैं। वे अण्डज प्राणी हैं। कहा जाता है कि कुछ मछलियां आठ से दस लाख तक अंडे देती हैं। रोहू मछली छै लाख अंडे देती है।

३—उभयचर श्रेणी

उभयचर उन जीवों को कहा जाता है जो जल और स्थल दोनों जगह आसानी से रह लेते हैं। इनका शैशव काल पानी में बीतता है और उस समय ये मछलियों की तरह अपने गलफडों से सांस लेते हैं। बड़े होने पर गलफड़े बन्द होकर इनके फेफड़ों का विकास होता है और तब ये उनसे सांस लेते हैं।

मेंढ़क

उभयचर श्रेणी का सुप्रसिद्ध प्राणी मेंढ़क है। यह सारे भारतवर्ष में पाया जाता है। मेंढ़क दादुर परिवार के अन्य जीवों जैसे मेकचुर, मदोबर आदि की अपेक्षा बड़ा होता है। इसके दो नमूने संग्रहालय की दीर्घा में प्रदर्शित हैं। इसकी पीठ का रंग भूरा गंदा हरा या जैतूनी होता है जिसपर गहरे रंग की चित्तियां पड़ी रहती हैं। नर मेंढ़क के गले के दोनों ओर स्वर ग्रन्थियां होती हैं। बरसात में मेंढ़कों की बोली बहुत सुनाई देती है लेकिन उसका यह कारण नहीं है कि ये अधिक पानी के कारण खुश होकर ज्यादा बोलते हैं बल्कि यही समय इनके जोड़ा बांधने का होता है। बोलते समय मेंढ़क का मुंह नहीं खुलता। वह हवा को फेफड़ों से मुंह तक लाता तो है पर फिर उसे फेफड़े में ले जाता है। शरीर में पसलियां नहीं होने के कारण सांस लेने पर मेंढ़क का सीना हम लोगों की तरह फूलता नहीं है। मेंढ़क उछल कर चलता है। क्यों? क्योंकि उसके पैर छोटे होते हैं और पिछले पैर लम्बे। बैठे रहने पर वह पिछली टांगों को सिकोड़ कर रखता है लेकिन तैरते समय इन्हीं टांगों को बाहर की ओर फेंककर पानी में आगे बढ़ता है। मेंढ़क का भोजन कीड़े मकोड़े है पर ये मरे हुये कीड़ों को नहीं खाते। इनके शरीर से सांप की तरह जो केंचुल निकलती है उसे ये फौरन खा जाते हैं।

मेढ़क का शरीर कई प्रकार के परिवर्तनों के बाद सम्पूर्ण होता है। साल में एक बार मादा हजारों अण्डे देती है। ये अण्डे बहुत छोटे, गोल और आपस में पतली झिल्ली से जुड़े रहते हैं। वे पानी पर इधर उधर तैरते रहते हैं। जब अण्डे फूटते हैं तो उनमें से टैडपोल निकलते हैं। उस समय वे मछली के तरह होते हैं। फिर क्रमशः पिछले पैर निकलते हैं और बाद में दोनों अगले पैर। थोड़ा थोड़ा करके उनकी दुम गायब हो जाती है। गलफड़ों के स्थान पर फेफड़े उत्पन्न हो जाने से वे पानी के बाहर रहने के योग्य हो जाते हैं। इस रूपान्तर के पूर्ण होने में चार पांच हफ्ते लग जाते हैं। हजारों अण्डे होने पर कहीं जाकर एक मेंढ़क बन पाता है।

भेक या टर्र

हमारे घरों के आसपास फिरते हुये इस प्राणी को अक्सर हम मेंढक समझ बैठते हैं किन्तु ऊपर से मेंढ़क के समान होने पर भी यह मेंढ़क से कई बातों में भिन्न होता है। इसके

शरीर की खाल चिकनी नहीं होती बल्कि रूखी और खुरदरी होती है जिसपर दाने दाने से उभरे रहते हैं। यह मेंढ़क की अपेक्षा कद में छोटा होता है। टर्र कूद कूद कर नहीं चलता बल्कि जमीन पर धीरे धीरे चलता है। मेंढ़क के समान यह भी कीड़े मकोड़े खाता है।

४—सरीसृप

सरीसृप उन जानवरों को कहते हैं जो जमीन पर रेंग कर चलते हैं। इसमें मगर, घड़ियाल, सांप, और सभी प्रकार की छिपकलियां सम्मिलित हैं। सरीसृप ठंडे खून वाले प्राणी कहलाते हैं जिसका अर्थ यह होता है कि इन जीवों के शरीर का तापमान हवा-पानी के तापमान के अनुसार घटता बढ़ता रहता है। सरीसृपों में मगर और घड़ियाल कद में सबसे बड़े होते हैं, इसी प्रकार सांप भी काफी बड़े बड़े देखे गये हैं।

मगर

मगर नक्रवर्ग का प्राणी है जो इसी वर्ग के दूसरे प्राणी घड़ियाल से अनेक बातों में भिन्न है। मगर भारत ही नहीं, दूसरे देशों में भी पाया जाता है किन्तु घड़ियाल शुद्ध भारतीय है। वह भी केवल गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, महानदी और उनकी सहायक नदियों में ही निवास करता है। मगर और घड़ियाल दोनों की आदतें समान हैं पर घड़ियाल की शकल सूरत मगर से अलग होती है। मगर के मुंह की बनावट गोह और छिपकली जैसी होती है लेकिन घड़ियाल का थूथन काफी लम्बा होता है जिसके सिरे पर एक गोला कुब्बक सा उठा रहता है। घड़ियाल आदमियों पर हमला नहीं करते किन्तु दबाव पड़ने पर अपनी दुम से बार करते हैं जो घातक होता है। घड़ियाल केवल मछलियां खाता है पर मगर, मछलियों के अलावा अन्य पशुओं को भी शिकार कर लेता है।

संग्रहालय में प्रदर्शित मगर समुद्री मगर नहीं है। वह नदियों और जलाशयों में रहने वाले मगरों में से है। इस जाति के जीव गजब के चालाक होते हैं। उनकी पाचन शक्ति भी बड़ी तेज होती है। वे निगली हुई हड्डियों को भी आसानी से पचा डालते हैं। कहा जाता है कि मगर अपनी पाचन शक्ति को तेज करने के लिये प्रायः पत्थर के टुकड़ों को निगलता रहता है। जल में रहने पर भी मगर को सांस लेने के लिये थोड़ी थोड़ी देर में अपने नथुनों को पानी से बाहर निकालना पड़ता है। मगर जब मुंह खोलता है तो ऐसा लगता है कि वह अपना ऊपरी जबड़ा उठा रहा है। किन्तु वास्तव में वह हमेशा अपना निचला जबड़ा ही चलाया करता है। इसके गले की नली में एक परदा लगा होता है। इसके कारण, जब वह पानी में भी मछलियों का शिकार करता है तो मुंह खोलने पर पानी उसके मुंह के भीतर नहीं जाता। मगर का चमड़ा बड़ा मजबूत होता है। उस पर बन्दूक की गोली भी जल्द असर नहीं करती। मगर की पेट पर की खाल से जूते और सूटकेस आदि बनाये जाते हैं।

गोह

यह गोधा वर्ग का सरीसृप है जिसमें इसके परिवार के अलावा गिरगिट, ब्रह्मनी, छिपकली आदि अन्य परिवार भी सम्मिलित हैं। गोह अपने पंजों की मजबूती के लिये सबसे अधिक

प्रसिद्ध है। यह छिपकलियों में सबसे बड़ा होता है और इसकी खाल का व्यवहार जूते, बैग आदि बनाने के लिये होता है, ये प्राणी सूखे में भी रहते हैं और पानी में भी। इनकी जबान बहुत लम्बी, चिकनी तथा सांप की जबान की तरह दुफंकी होती है। आंख की पुतली गोल होती हे जिस पर मोटी मोटी पलकें होती हैं। गोह की गरदन लम्बी एवं सभी अंग मजबूत और सुडौल होते हैं। इनके सिर पर छोटे छोटे शल्क होते हैं जिनके किनारे दाने से उभरे रहते हैं। यह प्राणी मांसाहारी है और छोटे मेंढक, सांप, चिड़िया आदि इसके भोजन हैं। गोह की दो और जातियां सुप्रसिद्ध हैं। उनमें से कबरा गोह हमारे यहां के सबसे बड़े गोह हैं। चंदन गोह का रंग पीला होता है।

सांडा

गोह के अतिरिक्त सैकड़ों किस्म की और भी छिपकलियां हमारे देश में होती हैं। लेकिन इनमें से जहरीली कोई भी नहीं होती। स्वयं छिपकली के परिवार में ७० प्रकार के प्राणी हैं। उनमें से कुछ तो बिलकुल गूंगी ही होती हैं और कुछ महीन सी आवाज करती हैं। ब्रह्मनी भी हमने अक्सर देखी है, वह छिपकली से मिलती जुलती है लेकिन उसका सिर और गरदन एक ही में मिले रहते हैं। उसकी दुम छिपकलियों की तरह नाजुक होती है और रंग रूप में बड़ी ही सुन्दर होती है। ब्रह्मनी भी जहरीली नहीं होती।

संग्रहालय में सांडे का एक नमूना प्रदर्शित है। यह प्राणी गिरगिट परिवार का है। इसके शरीर की बनावट गठीली होती है। दुम के उपरी हिस्से पर कांटे कांटे से रहते हैं जिसकी मदद से ये अपनी आत्मरक्षा करते हैं। सांडा शाकाहारी जीव है और ऊसर तथा रेगिस्तानी प्रान्तों में पाया जाता है। यह जमीन में बिल खोदकर रहता है।

सांडे के परिवार में सम्मिलित गिरगिट अपनी रंग बदलने की आदत के कारण सुप्रसिद्ध है। वह सांडे से लम्बा किन्तु पतला होता है। उसकी दुम काफी लम्बी होतीं है। गिरगिट के संबंध में एक बात ध्यान रखने की है कि रंग केवल नर ही बदलता है, वह भी जोड़ा बांधने के समय में अपनी मादा को रिझाने के लिये। गिरगिट के समान एक और प्राणी होता है, उसे बहुरूपी कहते हैं। उसकी भी रंग बदलने की शक्ति अद्‌भुत होती है। उसके सिर पर की हड्डी कलगी की तरह उठी रहती है। इस प्राणी की दुम तो लम्बी होती ही है सबसे आश्चर्यजनक है उसकी लम्बी, गोल और मुग्दर जैसी जबान जिसे वह बड़ी तेजी से तीर की तरह बाहर फेंकता है। जबान के सिरे पर के चिपचिपे पदार्थ में कीड़े मकोड़े चिपक कर इसके पेट में पहुंच जाते हैं। बहुरूपी बड़ा आलसी प्राणी है। वह अपना शिकार एक जगह बैठे बैठे करता है।

सर्प वर्ग

संग्रहालय में प्रदर्शित सांपों के विवरण देने के पहले सांपों के संबंध की मुख्य मुख्य बातों की जानकारी कर लेना विशेष उपयोगी होगा क्योंकि सर्प वर्ग सरीसृपों का सबसे बड़ा वर्ग

है। अब तक सारे संसार में सांपों की लगभग १५ हजार जातियों का पता चला सका है जो नौ परिवारों में विभक्त हैं।

सांप हैं तो छिपकलियों के भाई-बंधु, किन्तु दोनों की शकल सूरत में बड़ा फरक है। छिपकली के चार पैर होते हैं किन्तु सांप ने उन्हें बेकार समझ कर त्याग दिया। सांप की न तो पलकें ही भंजती हैं और न ही इनके कान के छेद होते हैं। कान न होने से ये सुन नहीं सकते। ये आंख से भी नहीं सुनते। किन्तु इनकी त्वचा को सुनने या आहट का अनुभव करने की शक्ति प्राप्त है। आहट पृथ्वी की सतह के सहारे सांप के शरीर तक पहुंच जाती है। इसलिये अगर कोई आदमी सांप से कुछ दूर पर पैर पटकता है तो सांप को उसका तुरन्त पता चल जाता है। इस बात में कि सांप बीन के स्वर से मुग्ध हो जाता है, कोई सचाई नहीं है। जब वह बीन का स्वर सुन ही नहीं सकता तो मुग्ध होकर नाचने का प्रश्न ही कहां उपस्थित होता है। होता वास्तव में यह है कि जब संपेरा अपनी बीन बजाता है तो अपनी तूंबी को सांप के फन के पास ले जाकर हिलाता है। सांप अपने बचाव के लिये अपना सिर तूंबी के पास उसके साथ ही साथ हिलाता है और मौका पाते ही संपेरे पर फन का वार करता है। इस समय हम सोचते हैं कि सांप बीन के स्वर से प्रसन्न होकर झूम रहा है।

सांप की जबान फटी रहती है। उसे लपलपाते देख कर डर लगता है। सांप के पैर न होने पर भी वे बड़ी तेजी से भागते हैं। पेट के नीचे के लम्बे और पतले सेहरों की कतार भागने में सांप की मदद करती है।

ज्यादातर सांप हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाते क्योंकि विषैले सांपों की संख्या संसार में अपेक्षाकृत कम ही है। जो सांप जहरीले होते हैं वे भी अकारण नहीं काटते। जहरीले सांप में विष की ग्रन्थियां उनके ऊपरी जबड़े के ऊपरी ओर दोनों आंखों के पीछे और नीचे रहती हैं। ये ग्रंथियां जहरीले दांतों की जड़ तक एक नली से जुड़ी रहती हैं। जहरीले दांत पोले रहते हैं और उनके सिरे या नोक पर एक बहुत पतला छेद होता है जिसे भीतर गड़ाकर सांप अपनी विषग्रथियों से विष भर देता है ठीक उसी प्रकार जैसे डाक्टर इंजेक्शन देता है।

अजगर

सांपों के मुख्य परिवार तीन हैं, अजगर परिवार, नाग परिवार और दुबोइया परिवार। अजगर परिवार के जीव अपने भारी शरीर के लिये प्रसिद्ध हैं। वे कभी कभी २५-३० फुट तक लम्बे पाये जाते हैं। अजगर बड़ा सुस्त और सीधा जानवर है उसके विष के दांत तो नहीं होते पर वह शिकार को अपनी कुण्डली में कस कर मारता है और फिर समूचा ही निगल जाता है। अजगर का सिर गोल, सिर चौड़ा, आंखें औसत कद की और पुतलियां आड़ी होती हैं। वह रात में भी देख सकता है। पेड़ पर चढ़ जाने और तैरने की कला भी इन्हें खूब आती हैं। मादा अजगर एक बार में ८ से १०० तक अंडे देती है। बच्चे दो फुट या उससे कुछ बड़े होते हैं। अजगर का एक नमूना संग्रहालय की दीर्घा में प्रदर्शित है।

दूसरे परिवार याने नाग परिवार के प्राणी संग्रहालय में प्रदर्शित तो नहीं है पर उनका परिवार सबसे बड़ा होने तथा उसमें जहरीले सर्प होने के कारण उनका यहां उल्लेख कर देना आवश्यक है । इस परिवार के कुछ प्राणी जमीन पर, कुछ पेड़ पर और कुछ पानी में भी रहते हैं । इस परिवार का विषहीन सांप धामिन है । विषधर सांपों में करायत, नाग, आदि से हम परिचित हैं । नागराज घने जंगलों में रहता है, इसलिये वह महान विषैला होते हुए भी हमारे लिये चिन्ता की चीज नहीं है । समुद्र के सभी सांप, जैसे चीतल आदि जहरीले होते हैं पर वे भी हमारे निकट नहीं आते ।

नाग अकारण हमला नहीं करता लेकिन जब उस पर दबाव पड़ता है तो फन फैला कर डसने को तैयार हो जाता है । उस समय की उसकी फुफकार बड़ी डरावनी होती है । पुराने नाग उतने गुस्सैल नहीं होते पर बच्चे और जवान बड़े गुस्सैल होते हैं । नाग का जहर बहुत तेज होता है और उसके डसने से काफी आदमी प्रति वर्ष मरते हैं । नागराज नाग से भी अधिक जहरीला और खतरनाक होता है । वह कद में भी नाग से बड़ा होता है । इसके नाग के समान फन होता है पर उस पर चिह्न नहीं होता । नागराज बहुत तेज चलता है कि उसके सामने पड़ जाने पर भागना कठिन होता है । आदमी को देखकर वह पीछा करता है । नागराज का मुख्य भोजन सांप है और वह नाग जैसे जहरीले सांपों को भी खाता है । करायत भी जहरीला सांप है और रात में निकलता है। इसे अक्सर जोडे में देखा गया है । एक के मारे जाने पर दूसरा हमला कर देता है । इसके काटने पर चंद घंटों में ही मृत्यु हो जाती है । घोड़ा करायत का जहर नाग से भी तेज होता है । इतने पर भी यह देखने में बड़ा सुन्दर लगता है और इसके शरीर पर काली और पीली पट्टियां भरी रहती हैं ।

कौड़िया या दुबोइया

दुबोइया का परिवार है तो छोटा पर उसमें के प्रायः सभी सांप विषैले होते हैं । इनका शरीर भारी और सिर चपटा रहता है । दुबोइया या कौड़िया को अंग्रेजी में रसेल्स वाइपर कहते हैं । यह ३-४ फुट का, हल्के भूरे रंग का सांप है जिसके शरीर के ऊपरी हिस्से पर छल्लेनुमा चित्तियां रहती हैं । इसके जहर के दांत नाग के दांतों से भी बड़े होते हैं । फुफकार भी इसकी तेज ही होती है । इस जाति की विशेषता यह है कि मादा अण्डे न देकर बच्चे जनती है ।

फुरसा भी दुबोइया परिवार का सांप है । वह बड़ा क्रोधी होता है और तेजी के साथ आक्रमण करता है । उसकी लम्बाई लगभग २ फुट होती है और जब वह चलता है तो उसके दोनों बगल के कांटेदार शल्कों से एक तेज आवाज निकलती है जिससे उसे दूर से ही पहचाना जा सकता है ।

५—स्तनप्राणी

स्तनप्राणी अन्य सभी [जीवों से अधिक विकसित हैं। उनकी विशेषता है कि उनके शरीर पर बाल होते हैं और वे अपने बच्चों को स्तन से दूध पिलाते हैं। वे अण्डे की जगह बच्चे जनते हैं। अधिकतर स्तनप्राणी खुश्की पर ही रहते हैं लेकिन चमगीदड़ों जैसे कुछ आकाश में भी उड़ते हैं। तिमिवर्ग के प्राणी जल में और चूहे जैसे जानवर जमीन में बिल खोदकर निवास करते हैं।

स्तनप्राणियों में ज्यादातर चौपाये होते हैं। इनमें से कुछ के पैर में पांच नाखून होते हैं, जैसे हाथी आदि। किन्तु गाय-बैल, हिरन आदि के पैरों में नाखूनों की जगह खुर होते हैं जो बीच से फटे रहते हैं। घोड़े के पैरों में एक ही नाखून होता है जिसे सुम कहते हैं। इससे वह कड़ी जमीन पर तेजी से भाग सकता है। ऊंट को बालू में चलना पड़ता है इसलिये उसके पैर का हिस्सा चौड़ा और गद्देदार होता है जिससे वह बालू में धंसता नहीं है। मांस भक्षी जीवों के नाखून तेज होते हैं। वे भीतर छिपे रहते हैं पर जरूरत के वक्त उन्हें निकालकर उनसे शिकार को पकड़ा जा सकता है।

स्तनप्राणी श्रेणी के जीवों की तीन उपश्रेणियां हैं यथा अण्डज, शिशुधानिन और जटायुधारी। पहली और दूसरी उपश्रेणी के जीव अपने देश में नहीं मिलते। तीसरी उपश्रेणी के जीवों की विशेषता यह है कि उनके गर्भस्थ शिशु का पोषण एक नाल द्वारा होता है जो मां और शिशु से जुड़ी रहती है।

साल

जरायुधारी उपश्रेणी को भी विद्वानों ने सुविधा के लिये अनेक वर्गों में बांटा है और उन वर्गों को फिर विभिन्न परिवारों में। संग्रहालय में प्रदर्शित साल अपने परिवार का एक ही प्राणी है जो अदन्त वर्ग के अन्तर्गत जाता है। इसका कद लगभग दो फुट होता है। इसके बदन का उपरी और बगली आदि हिस्सा शल्कों से ढंका रहता है, सिर के ऊपरी हिस्से पर भी शल्क होते हैं। लेकिन टांगों के भीतरी हिस्से और दुम को छोड़कर नीचे का सारा हिस्सा सादा होता है। साल के पैर टेढ़े होते हैं। उसके पंजों के नाखून भी टेढ़े और मजबूत होते हैं। इसकी जबान लम्बी होती है। उस पर एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ होता है। साल का मुख्य भोजन दीमक है। इसकी मादा जाड़े के अन्त में एक और कभी कभी दो बच्चे जनती है।

जिस प्रकार साल अदन्त वर्ग का प्राणी है उसी प्रकार समुद्री गाय और ह्वेल आदि भी समुद्र में रहने वाले स्तनप्राणी हैं।

मृग या कृष्णसार

सभी खुरवाले पशु जो घासपात खाते हैं शफवर्ग में ग्राते हैं। यह बहुत बड़ा वर्ग है, जिसमें गाय-बैल, भेड़-बकरी, हिरन, बारहसिंगे, ऊंट, शूकर, ग्रादि सभी प्रकार के प्राणी ग्रा जाते हैं जिनके कृन्तक दांत छेनी की तरह तेज धार वाले होते हैं। इस वर्ग के गो परिवार के प्राणियों के सींग स्थिर होते हैं जो एक ठोस हड्डी के ऊपर कड़े खोल की तरह चढे रहते हैं। वे बारहसिंघों के सींगों की तरह हर साल गिर नहीं जाते ग्रौर न उनमें शाखाएं होती हैं।

मृग हमारे यहां का सबसे प्रसिद्ध हिरण है, इसे कृष्णसार, कालामृग, ग्रादि भी कहा जाता है। यह चार फुट के लगभग लम्बा ग्रौर ढाई फुट ऊंचा होता है। मादाएं कुछ छोटी होती हैं ग्रौर उनके सींग नहीं होते। मृगों की ग्रादत है कि वे गिरोह बांधकर रहते हैं। वे बहुत तेज भागते हैं ग्रौर भागते समय लम्बी छलांगें मारते हैं जो चौकड़ी भरना कहा जाता है।

चिंकारा

ये मृग से कद में छोटे होते हैं पर सुन्दर उतने ही होते हैं। इनके नर ग्रौर मादा दोनों के सींग होते हैं। नर के सींग घरारीदार होते हैं किन्तु मादा के सादे ग्रौर छोटे। चिंकारे, मृगों की भांति गिरोह नहीं बनाते। या तो ये जोड़े में घूमते हैं या अधिक से ग्रधिक चार छह एक साथ रहते हैं। ये भी मृगों की भांति तेज भागते हैं पर चौकड़ी नहीं भरते।

चौसिंगा

यह प्राणी ग्राता तो शफवर्ग ग्रौर गो परिवार में ही है किन्तु इसका तथा इसके जैसे रोझ ग्रादि प्राणियों का एक ग्रलग उपपरिवार है जिसे रोझ उपपरिवार कहते हैं। चौसिंगा चार सींगों वाला हिरन है जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है। इनके नर ग्रौर मादा दोनों रंग में एक से ही होते हैं ग्रर्थात उनका ऊपरी हिस्सा बादामी रंग का ग्रौर नीचे का सफेद। इनकी ऊंचाई दो सवा दो फुट ग्रौर लम्बाई तीन साढ़े तीन फुट होती है। सींग केवल नर के ही होते हैं। वह मादा से कुछ बड़ा होता है। चौसिंगा प्रायः जोड़े में रहता है, वह भी ग्रधिकतर पानी के पास। इन्हें गिरोह बनाना नापसन्द है। जनवरी फरवरी में पांच छह महीने पर इनकी मादा एक या दो बच्चे देती है।

चीतल

चीतल बारहसिंधा उपपरिवार का प्राणी है जिसमें बारहसिंघे के ग्रलावा, सांभर, हंगल, काकड़, पाढ़ा ग्रौर कस्तूरी मृग ग्रादि भी शामिल हैं। चीतल चित्तीदार होता है। कद में छोटा होने पर भी वह सुंदरता में सबसे ग्रागे है। पंजाब ग्रौर राजपूताना को छोड़कर यह हमारे देश के प्रायः सभी जंगलों में पाया जाता है। इसकी लम्बाई करीब पांच फुट ग्रौर

ऊंचाई तीन सवा तीन फुट होती है। चीतल के सींग करीब तीन फुट लम्बे और तीन शाखाओं वाले होते हैं।

चीतल गिरोह बांधकर रहता है। इनके झुंड कभी कभी सौ सौ तक हो जाते हैं जो दिन में आराम करके शाम को चराई के लिये निकलते हैं। इन्हें जलाशय के आसपास की झाड़ियां और बांस से भरे हुए स्थान बहुत पसंद हैं। इनका बोलना बहुत तेज होता है। चीतल के सींग गिर जाया करते हैं किन्तु उस का कोई निश्चित समय नहीं होता। गिरे हुये सींगों के स्थान पर नये सींग आ जाते हैं और वे तीन चार महीने के भीतर ही पहले जैसे हो जाते हैं। इस प्राणी का जोड़ा बांधने का समय सितम्बर है पर यह बीच में भी जोड़ा बांध लेता है। आठ महीने पर चितली एक या दो बच्चे जनती है।

काकड़

यह भी बारहसिंघों के भाई-बन्धु हैं। इनके सींग चीतल की तरह हर साल या कई साल पर गिरते तो जरूर हैं पर पूरे सींग नहीं गिरते; केवल उनका थोड़ा सा ऊपरी हिस्सा गिर जाता है। काकड़ आवाज बड़ी तेज करता है। यह गिरोह नहीं बनाता, अकेला या जोड़े में घूमता है। जब भागता है तो अपना सिर नीचा करके और पिछला हिस्सा उठाकर बडे बेढंगे तरीके से भागता है। काकड़ को जंगलवाली पहाड़ियां पसन्द हैं। इसका रंग गाढा कत्थई, ऊपर कलछौंह और नीचे हलका हो जाता है। इसका चेहरा और पैर हलके भूरे होते हैं। गले का ऊपरी हिस्सा, पैर और दुम का निचला भाग सफेद रहता है। इस जानवर की लम्बाई तीन फुट से ज्यादा नहीं होती है और ऊंचाई तो दो फुट से कम ही होती है। मादा बिना सींगों की होती है और नर के सात आठ इंच लम्बे सींगों में दो शाखायें होती हैं। इनका जोड़ा बांधने का समय जनवरी-फरवरी है। करीब पांच महीने पर मादा एक या दो बच्चे देती है।

बारहसिघा उपपरिवार का एक प्राणी कस्तूरी मृग भी है जिसके सींग नहीं होते। वह संग्रहालय के संग्रह में नहीं है।

जंगली सुअर

सुअर परिवार में सुअर ही अकेला प्राणी है। ये जंगली भी होते हैं और पालतू भी। पालतू सुअर फुर्तीले नहीं होते। सुअरों की खाल बहुत मोटी होती है तथा उनके शरीर के बाल भी बहुत कड़े होते हैं। इनका थूथन आगे की ओर चपटा होता है जिसमें भीतर की ओर मुलायम हड्डी का एक चक्कर सा रहता है जो थूथन को कड़ा बनाये रखता है। इसी गोल और चपटे थूथन की बदौलत सुअर बड़ी आसानी से जमीन को खोद डालते हैं और बड़े बड़े पत्थरों को सहज में उलट देते हैं।

जंगली सूअर का नमूना संग्रहालय दीर्घा में प्रदर्शित है। ये जंगली सुअर हमारे देश में सभी जगह फैले हुये हैं। इन्हें कीचड़ अधिक पसन्द है। दिन भर तो ये झाड़ियों में छिपे रहते हैं किन्तु शाम और रात को इनका आठ-दस का गिरोह चराई के लिये निकल पड़ता है। रात भर चरकर ये सुबह फिर अपने स्थान को लौट जाते हैं। इनकी सूंघने की शक्ति बड़ी तेज होती है जिसके सहारे ये जमीन के भीतर की स्वादिष्ट जड़ों का पता लगा लेते हैं। इनका मुख्य भोजन फल-फूल, जड़ें आदि है। जंगली सूअर भागने में तेज होते हैं पर उनकी वह तेजी थोड़ी ही दूर तक रहती हैं। इसका स्वभाव है कि अकारण हमला नहीं करते किन्तु घायल हो जाने पर ये भयंकर हमला करते हैं और दुश्मनों का पेट तक फाड़ डालते हैं।

तीक्ष्णदन्त वर्ग

तीक्ष्णदन्त वर्ग के जीवों के दांत बड़े तेज होते हैं जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है। इनके पैने दांत कड़ी चीजों को कुतरने के लिये ही बनाये गये हैं और उनकी विशेषता यह है कि वे निरन्तर बढ़ते रहते हैं। इस वर्ग के दो उपवर्ग हैं, यथा एकदन्त उपवर्ग और द्विदन्त उपवर्ग। एकदन्त उपवर्ग के प्राणियों के मुख में ऊपरी जबड़े के आगे की ओर दांतों की एक ही जोड़ी रहती है जैसे गिलहरी, चूहा, साही आदि जीवों में; जब कि द्विदन्त उपवर्ग में सम्मिलित जीवों के दुहरे दांतों की जोड़ी होती है, जैसे खरगोश।

गिलहरी

गिलहरी जंगलों में रहती है और बाग-बगीचों में भी। बाग-बगीचों की गिलहरी को हम रोज देखते ही हैं जो बड़ी चंचल होती ह। जंगली गिलहरी जंगल में रहती है। उसका सारा समय पेड़ों पर ही बीतता है। वह जमीन पर कम ही उतरती है। उसे यदि एक डाल से दूसरी डाल पर जाना होता है तो कूद कर वह वहां पहुंच जाती है वह भी बीस-बीस फुट तक। जंगली गिलहरी का कद ड़ेढ फुट तक लम्बा हो जाता है। उसकी दुम भी इतनी ही लम्बी होती है। उसके घोंसले ऊंची डाल पर बनते हैं और उनमें पत्तियों तथा टहनियों का उपयोग होता है; जबकि बाग-बगीचों वाली गिलहरी अपना घोंसला किसी पेड़ के खोके में रखती है।

गिलहरी के शरीर के बाल घन और कोमल चमकीले होते हैं। उसे सफाई बहुत पसंद है इसलिये बिल्लियों की तरह अपना बदन चाटकर साफ रखती है। मादा गिलहरी समय आने पर तीन चार बच्चे देती है।

मूस और घूंस

चूहे, चुहिया, घूंस, इनसे हम भली भांति परिचित हैं। ये भी एक-दन्त उपवर्ग के प्राणी हैं और हमारे घरों में घूमते फिरते हैं। चूहे काले होते हैं, भूरे होते हैं और छोटे छोटे

भी होते हैं जिन्हें चुहिया कहा जाता है। मूस खेत का चूहा है, किन्तु घरों में भी चला आता है। उसी प्रकार घूंस भी खेतों का चूहा है और वहां बिल बनाकर रहता है किन्तु इसका हमला घरों में भी होता है। ये गल्ला के अलावा फल-फूल आदि भी खाते हैं। इनकी मांदा साल में कई बार आठ से दस बच्चे देती है।

खरगोश

द्विदन्त उपवर्ग के इस प्राणी का सारा शरीर मुलायम रोमों से ढंका रहता है और इसके कान बड़े बड़े होते हैं। चूंकि इसके जबड़े के आगे की ओर दुहरे दांतों की जोड़ी रहती है इसलिये यह गिलहरी और चूहों आदि से अलग किया गया है। खरगोश अठारह बीस इंच लम्बे होते हैं। उनकी दुम तीन चार इंच होती है। इनके बदन का ऊपरी हिस्सा हलका खैरा रहता है। स्मरण रहे कि दूध से सफेद रंग वाला रेबिट हमारे देश में बाहर से आया हुआ प्राणी है।

चूहे बिल बनाते हैं किन्तु खरगोश बिल खोदकर नहीं रहते। खतरा आ जाने पर वे किसी झाडी या गढ़े में छिप जाते हैं। ये बड़े सीधे जानवर हैं। भागते समय लम्बी लम्बी छलांगें मारते हैं। इनका मुख्य भोजन घास और नरम नरम पौधे हैं।

मादा खरगोश हर महीने एक से दो तक बच्चे देती है। ये बच्चे भी छह महीने के होने पर बच्चे देने लगते हैं।

मांसभक्षी वर्ग

मांसभक्षी वर्ग में उन जीवों को एकत्र किया गया है जो सभी मांस खाते हैं। ये प्राणी बहुत तेज, खूंखार, आक्रमणकारी और फुरतीले होते हैं। ये चालाक भी बहुत होते हैं। इन सभी प्राणियों की अंगुलियों में तेज नाखून रहते हैं। वे जब चाहें तब अपने नाखूनों को भीतर छिपा सकते हैं और मौका पड़ने पर बाहर निकाल सकते हैं। इन्हें अन्य जीवों का शिकार करना पड़ता है इसलिये इनके पैर के तलुवे गद्देदार होते हैं जिससे इनके चलने में आवाज नहीं होती। ये चुपचाप अपने शिकार तक पहुंच जाते हैं। ये प्राणी तेज दौड़ते हैं और अधिकतर छरहरे बदन के होते हैं। इनकी जबान खुरदरी, दांत चीड़फाड़ के लिये उपयोगी तथा सूंघने और सुनने की शक्ति तेज होती है।

बिल्ली और बनबिलार

बिल्ली को हमारे यहां शेर की मौसी कहा जाता है। वास्तव में उसका शेर से पारिवारिक संबंध है। शेर ही क्यों, सिंह, बाघ, तेंदुआ, चीता, बनबिलार और घरेलू बिल्ली

ये सभी एक परिवार के हैं। इस परिवार के ज्यादातर प्राणी रात्रिचारी हैं किन्तु कुछ को दिन में भी देखा जाता है जैसे स्वयं बिल्ली को। इनकी आंखों की पुतलियों में फैलकर बड़ी हो जाने की क्षमता होने से ये जीव थोड़ी रोशनी में भी बहुत देख सकते हैं। बनबिलार अपने यहां की प्रसिद्ध बिल्ली है जो देश के सभी जंगली स्थानों में पाई जाती है। यह हमारी पालतू बिल्लियों के बराबर लगभग दो फुट लम्बा और एक फुट से कुछ अधिक ऊंचा होता है। पालतू बिल्ली मांस भक्षी तो है ही पर घर में चूहों के साथ साथ दूध दही के लिये भी चक्कर लगाती रहती है। बिल्लियां एक बार में कई बच्चे देती हैं जिन्हें वह थोड़े थोड़े दिन पर एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले जाकर रखती हैं।

चीता

संसार का सबसे तेज दौड़ने वाला स्तनप्राणी चीता, केवल हमारे देश में ही पाया जाता है। किन्तु इसकी नस्ल हमारे देश से भी अब लुप्तप्राय हो चुकी है क्योंकि बिना सोचे विचारे इसका अंधाधुंध शिकार किया गया है। चीते तेंदुये के निकट संबंधी हैं। इनका रूपरंग भी वैसा ही है किन्तु ये अपने पतले पैर, छोटे सिर और छरहरे वदन के कारण शरीर की बनावट में तेंदुये से एकदम अलग हो जाते हैं।

चीते के शरीर पर काली चित्तियां रहती हैं। इनकी लम्बी दुम सिरे के पास कुछ घूमी रहती है। ऊंचाई ढ़ाई फुट और लम्बाई लगभग साढ़े चार फुट होती है।

कस्तूरी, नेवला और कटास

कस्तूरी परिवार भी मांस भक्षी है। इस परिवार के तीन प्राणी कस्तूरी, नेवला, और कटास जिसे ऊद भी कहते हैं, संग्रहालय दीर्घा में प्रदर्शित हैं। इस परिवार के जीव मंझोले कद के और कुछ उससे भी छोटे होते हैं। इन जीवों का मुंह बिल्ली परिवार के जीवों जैसा गोल नहीं होता बल्कि कुत्तों की तरह लम्बा होता है। इनके पैर भी छोटे होते हैं और ये पेड़ों पर आसानी से चढ़ सकते हैं। इनकी जीभ खुरदरी होती है। नाखून बिल्लियों की तरह भीतर की तरफ घुसे रहते हैं।

कस्तूरी को बिल्ली और लोमड़ी के बीच का जानवर कहना चाहिय। इसकी दुम के नीचे एक गंधवाली थैली रहती है जिसमें से एक प्रकार का तेज बदबूदार गाढ़ा पदार्थ निकला करता है। इसलिये इसे मुश्क बिल्ली भी कहते हैं। यह रात को निकलता है और छोटे पालतू जीवों को हानि पहुंचाता है। कटास या ऊद भी इसी की तरह रात्रिचर है। नेवले को हम सांप के जानी दुश्मन के रूप में जानते हैं। वह होता भी बड़ा फुर्तीला है। नेवला न केवल चालाक और अक्लमन्द ही बल्कि साहसी भी होता है और अपने से चौगुने जानवर पर

भी हमला कर के उसकी गरदन काटकर खून चूस लेता है। नेवले की दुम लम्बी होती है और रंग भूरा। वह रात और दिन दोनों समय बाहर निकलता है। नेवले बिल भी बनाते हैं और पेड़ों पर भी चढ़ जाते हैं।

लकड़बग्घा

इसका अपना परिवार है। इसकी सकल सूरत कुत्ते जैसी होती है। यह करीब साढ़े तीन फुट लम्बा होता है। इसकी गरदन और पीठ पर बड़े बड़े बाल होते हैं। लकड़बग्घा देखने में बेड़ौल और बदसूरत होता है, साथ ही डरावना भी। इसका अगला हिस्सा पतला और कमजोर होता है। यह मुर्दाखोर जानवर है। डरपोंक भी होता है। न तो इसमें तेजी होती है और न साहस। लेकिन इसके दांत बड़े मजबूत होते हैं जिनसे वह हाड़ चबाता रहता है। हमारे यहां के सभी जंगलों में इस जानवर को देखा जाता है। यह कभी कभी बस्तियों में घुसकर कुत्तों, मुर्गियों आदि को भी पकड़ता है, यहां तक कि मौका पाकर आदमियों के छोटे छोटे बच्चों को भी उठा ले जाता है।

सियार

सियार को गीदड़ भी कहते हैं। वह कुत्ता परिवार का प्राणी है। संग्रहालय में इसका एक नमूना प्रदर्शित है।

सियार भी रात्रिचर जीव है पर जाड़े के दिनों में दिन में भी दिखाई देता है। इसका मुख्य भोजन मांस मछली है लेकिन ये फलों को भी स्वाद से खाते हैं। तरबूज और खरबूज के खेतों में घुसकर नुकसान पहुंचाते हैं तथा रोगी और कमजोर जानवर पर हमला करते हैं

सियार अपनी धूर्तता के लिये प्रसिद्ध है। ये चिल्लाते भी बहुत हैं। जाड़े में शाम होते ही उनकी बोली सुनाई पड़ती है। पहले एक सियार बोलता है फिर उसके साथी उसके साथ शोर मचाने लगते हैं। सियार की मादा एक बार में कुत्तों की तरह कई बच्चे देती है।

लोमड़ी

लोमड़ी ज्यादातर खुले मैदानों और खेतों में घूमती रहती है क्योंकि उसे घने जंगलों में रहना पसंद नहीं है। यह जानवर सारे पशुसमाज में सबसे अधिक चालाक समझा जाता है। यह लगभग डेढ़ फुट लम्बी होती है और उसकी दुम भी लगभग इतनी ही लम्बी तथा मोटी और झबरी होती है। लोमड़ी और कौआ की सुप्रसिद्ध कहानी का संग्रहालय में प्रदर्शन किया गया है जो लोमड़ी की धूर्तता से संबंधित है। लोमड़ी बिल में रहती है पर स्वयं बिल न बनाकर बिज्जू आदि जानवरों के बिल पर जबरन अपना अधिकार जमा लेती है। इसका मुख्य भोजन मांस है पर अन्य भोजन जैसे फल फूल आदि भी खा लेती है।

ऊद या पनकुत्ता

इसका एक उपपरिवार है जो जल और स्थल दोनों में ही ग्रासानी से रह लेते हैं। इसलिये ऊद को पनकुत्ता भी कहते हैं। इसका कद छोटा और लम्बा तथा सिर चपटा और चौड़ा होता है। इसे ऊदबिलाव भी कहते हैं। यह लगभग दो फुट लम्बा होता है और रात में निकलता है। दिन में भी इन्हें गिरोह बांधकर नदियों में शिकार करते देखा जा सकता है। यह चालाक प्राणी है और इसका मुख्य भोजन मछली है, पानी में जाने के लिये इसके पैर के पंजे बत्तखों की तरह ग्रापस में जुड़े रहते हैं। ये जाड़ों के शुरू में जोड़ा बांधते हैं। समय ग्राने पर मादा दो से पांच तक बच्चे देती है। इन बच्चों की ग्रांखें कुत्तों के बच्चों के समान कुछ दिनों बाद ही खुलती हैं।

भालू

भालू का नाच तो हम सभी ने देखा होगा। इसका सिर गोल, थूथन लम्बा, पैर तगड़े, नख मजबूत और ग्रांखें छोटी होती हैं। दुम भी छोटी होती है। भालू की चाल बेढ़ंगी होती है। वे कई तरह के होते हैं जिनमें से एक प्रकार रीछ का भी है जो संग्रहालय में प्रदर्शित है। रीछ धुर काले रंग का होता है। उसके शरीर पर बड़े बड़े बाल होते हैं। ऊंचाई करीब २॥ फुट पर लम्बाई ५-६ फुट होती है। रीछ पेड़ पर चढ़ने में उस्ताद होता है। उसमें सुनने और देखने की शक्ति तो कम होती है पर सूंघने की शक्ति तेज होती है। जब वह घायल किया जाता है तो इतने जोर से चिल्लाता है कि सारा जंगल गूंज उठता है। उस समय यह ग्रपने दोनों पैरों पर खड़ा होकर ग्रादमी पर भयंकर हमला करता है और यदि वह पकड़ में ग्रा गया तो ग्रपने पंजों और दांतों से उसका मुंह और खोपड़ी नोंच डालता है।

भालू मांसभक्षी वर्ग का प्राणी है पर वह फल-फूल, शहद, दीमक, ग्रादि बड़े चाव से खाता है।

चमगादड़

चमगादड़ और इन्हीं जैसे ग्रन्य प्राणी करपक्ष वर्ग में ग्राते हैं। इनकी विशेषता इनके लम्बे कान हैं। ये कद में बड़े नहीं होते और इनकी दुम बहुत छोटी होती है। चमगादड़ों के कई उपपरिवार हैं पर उन सभी के प्राणियों की ग्रादतें प्रायः एक सी ही हैं।

चमगादड़ ३–४ इंच का होता है। उसके बगल में झिल्ली का फैलाव होता है जो एक से डेढ़ फुट तक रहता है। बगल के बाल काफ़ी मुलायम और लम्बे होते हैं, नाक पर पत्ती की शकल का उभार रहता है।

चमगादड़ पुरानी इमारतों और अंधेरी कोठरियों ग्रादि में दिन बिताते हैं जहां ये हजारों की संख्या में छिपे रहते हैं। शाम होने पर वे भोजन की तलाश में बाहर निकलते हैं। जिस स्थान में चमगादड़ों के झुंड रहते हैं वहां बड़ी बदबू ग्राती है।

चमगादड़ों का मुख्य भोजन रक्त है पर ये कीड़े-मकोड़े, मेढ़क और छोटी छोटी चिड़ियों को भी खाते हैं। ये अपने शिकार को पकड़ कर अपने लम्बे कानों के बीच में दबा लेते हैं और उड़ते उड़ते ही उसका खून चूस कर उसे छोड़ देते हैं। चमगादड़ की मादा एक बार में एक बच्चा देती है। वह बड़ा होने तक अपनी मां के पेट पर उलटा लटका रहता है। चमगीदड़ों की एक जाति कद में छोटी होने के कारण चमगीदड़ी कहलाती है।

बंदर और लंगूर

वानर वर्ग के बहुत से जीव हमारे देश में विचरते हैं। उनमें से दो सुप्रसिद्ध और सुपरिचित वानरों के संबंध में यहां लिखा जा रहा है जो संग्रहालय की दीर्घा में प्रदर्शित हैं।

एक तो साधारण बंदर है जिसके बदन पर सुनहरे बाल होते हैं और जिसका चेहरा और बैठने की जगह का हिस्सा लाल रहता है। इनकी दुम ज्यादा लम्बी नहीं होती। ये कद में लंगूरों से छोटे होते हैं। पर गुस्सैल ज्यादा होते हैं। ये उत्पाती भी खूब हैं और दवाव पड़ने पर काट खाते हैं। इनका मुख्य भोजन फल है किन्तु इन्हें रोटी, मिठाई, अनाज आदि भी पसन्द है। बंदरिया एक बार में एक बच्चा देती है जो मां के पेट से तब तक चिपका रहता है जब तक बड़ा नहीं हो जाता।

लंगूर भी हमारे सुपरिचित वानर हैं। इन्हें जंगल में रहना पसंद है जहां इनके बड़े बड़े गोल देखे जाते हैं। इनका कद और दुम दोनों ही बंदर से बड़े होते हैं। एक औसत लंगूर करीब दो फुट का होता है और उसके तीन साढ़े तीन फुट लम्बी दुम होती है। लंगूर का चेहरा, कान, तलुवे और हाथ पैर का ऊपरी भाग काला होता है, बाकी शरीर मटमैले रंग का या भूरा होता है। इनके बच्चों का चेहरा शुरू में काला नहीं होता पर उम्र के साथ उनका कालापन बढ़ता जाता है।

लंगूर का भोजन फल फूल है। ये सीधे जानवर हैं और बंदरों जैसे गुस्सैल नहीं हैं। इनकी मादा भी एक ही बच्चा देती है और वह मां के पेट से बड़ा होने तक चिपका रहता है।

वानर वर्ग के प्राणियों की खोपड़ी बड़ी होती है और उसका मस्तिष्क भी विकसित होता है। इनकी मादा की छाती पर दो स्तन होते हैं।

ऊपर वर्णित दो सुपरिचित जातियों के अलावा और भी कई प्रकार के वानर हमारे देश में होते हैं। दक्षिण का नील वानर कौतुक की वस्तु है। वनमानुष जाति के वानरों के दुम नहीं होती।

पक्षिश्रेणी

हमारे देश में तरह तरह की जलवायु है; किसी प्रदेश में मरुथल है तो किसी में सदाबहार घने जंगल। इसका प्रभाव पक्षियों के रंग रूप आदि पर पड़ा है और हमारे यहां लगभग २४०० जाति के पक्षी पाये जाते हैं। सारे संसार में पक्षियों की आठ दस हजार जातियां फैली हुई हैं।

पक्षी वास्तव में सरीसृपों याने रेंगने वाले जीवों से विकसित हुये हैं। य उनके परिवर्तित रूप हैं जिन्होंने अपना विकास कर के परों की पोशाक प्राप्त कर ली और आकाश में उड़ने लगे। पक्षी और सरीसृपों में अण्डे देने के विषय में समानता है, सरीसृपों की भांति पक्षियों के कुछ अवयवों पर शल्फ भी पाये जाते हैं।

पक्षियों की सबसे बड़ी विशेषता और उनके बड़े काम की वस्तु है उन के पर। ये पर उन के शरीर के तापमान को एक जैसा रखते हैं। पक्षियों का तापमान जलवायु के अनुसार कमता बढ़ता नहीं है, इसलिये इन्हें गर्म खून वाले प्राणी कहा जाता है। ये प्राणी विषम जलवायु में निवास कर सकते हैं, भले ही वह तपता हुआ मरुस्थल हो या वर्फ जमाने वाली कड़ाके की ठंड वाला प्रदेश। चिड़ियों का शरीर हल्का और सूच्याकार होता है, जिससे उन्हें हवा चीरकर आकाश में उड़ने में सहूलियत होती है।

पक्षियों की दृष्टि और श्रवणशक्ति काफी विकसित है, पर वे स्वाद का अनुभव कम कर पाते हैं। उनकी सूंघने की शक्ति तो नहीं के बराबर है। पक्षियों की आंखें उनके दोनों बगल में रहती हैं जिससे उन्हें अपनी गरदन को जिस ओर देखना होता है उस ओर घुमाना पड़ता है। उनकी गरदन बहुत लचीली होती है, वह हर दिशा में घूम जाती है। गरदन को घुमा घुमाकर पक्षी अपनी चोंच से भोजन चुनते हैं।

बोली

पक्षी बोलते हैं। उनकी बोली अनेक प्रकार की होती है। कुछ की बोली कर्कश और कुछ की मीठी होती है। कुछ चीत्कार भी करते हैं जो भयंकर होता है। कोयल, पपीहा और श्यामा अपनी मीठी बोली के लिये प्रसिद्ध हैं। इन्हें गाने वाली चिड़िया कहा जाता है। तोता और मैना मनुष्यों की बोली की नकल करते हैं। अपने इन प्यारे गुणों के कारण इन्हें पिंजड़ों में बंद करके रखा जाता है।

पंख

ऊपर बताया गया है कि पक्षी के पर उन के तापमान को एक जैसा रखते हैं और उड़ने में सहायक होते हैं। भिन्न भिन्न पक्षियों के पर भिन्न भिन्न शकल और भिन्न भिन्न रंग

के होते हैं। इन्हीं से हम पक्षियों को पहचानते हैं। पक्षियों के पर साल में एक, दो या तीन बार गिर जाते हैं और उनके स्थान पर नये पर निकल आते हैं। उस समय पक्षी अपनी नई पोशाक में बहुत सुन्दर लगते हैं। नर पक्षी की यह चटकदार पोशाक मादा को रिझाने में बड़े महत्व की वस्तु है जिसके बिना मादा पक्षी नर को जोड़ा बांधने स्वीकृति नहीं देती

प्रवासगमन

पक्षी प्रवास पर भी जाते हैं। उनकी वह लम्बी उड़ान हर साल जाड़ों के समय होती है। बत्तख जैसे बहुत से पक्षी अपने देश से उड़कर गर्म देशों की ओर चले जाते हैं; जब जाड़ा समाप्त हो जाता है तो वे अपने स्थान पर वापस आ जाते हैं। मौसमी बत्तखें अन्य देशों से हमारे देश में भी आतीं हैं। यहां तक की धुर उत्तर में साइबेरिया तक से। प्रवास गमन पर जाते समय पक्षी २००० फुट तक की ऊंचाई पर उड़ते हैं और उस समय उनकीं रफ्तार ३०–४० मील प्रति घंटे कीं होतीं है।

घोंसले

पक्षी अपने अण्डों और शिशुओं की सुरक्षा के लिये घोंसले बनाते हैं। लेकिन तीतर, बटेर, टिटहरी आदि पक्षी जमीन पर ही अण्डे दे देते हैं। पक्षियों में नियम है कि वे अपने घोंसले का एक स्थान चुन लेते हैं, उस स्थान पर उसी जाति का दूसरा जोड़ा एक तो जाता ही नहीं और यदि पहुंच जाता है तो भगा दिया जाता है। पक्षियों के घोंसले कई प्रकार के होते हैं। उनमें से बया का घोंसला कारीगरी का सबसे सुन्दर नमूना है।

घोंसले बनाने का काम प्रायः मादा पक्षी के जिम्मे रहता है और नर उसकी मदद करके उसे घोंसले का सामान घासफूस, आदि ला ला कर देता रहता है। किन्तु कुछ पक्षियों के घोंसले के संबंध में विचित्र जानकारी मिली है। कोयल तो अपना निजी घोंसला बनाती ही नहीं है, बल्कि अपने अण्डे कौए के घोंसले में रख आतीं है जहां वे पलते हैं। बया की जाति में नर घोंसला बनाना प्रारंभ करते हैं। ये घोंसले ज्यादातर पानी के निकट के बबूल आदि के पेडों में पानी पर लटकते हुये बनाये जाते हैं। जब घोंसला पूरा होने को होता है तो अचानक मादाओं का झुंड आ जाता है। वे घोंसले का निरीक्षण करतीं हैं। जिस मादा को जो घोंसला पसंद आ जाता है, उसे बनाने वाले नर कीं वह पत्नीं बन जाती है। तब दोनों मिलकर घोंसले को पूरा कर देते हैं। घोंसला पूरा हो चुकने पर और मादा के उसमें अण्डे देकर बैठ जाने पर नर वहां से चल देता है और पहले के समान दूसरा घोंसला बनाता है। इसे कोई और मादा पसंद कर लेतीं है और नर की पत्नी बन जातीं है। इस प्रकार नर ३–४ घोंसले बनाकर तीन चार पत्नियां और उनसे बहुत से बच्चे प्राप्त करता है।

बटेर में ठीक इससे उलटा होता है। उन में मादा बड़ी और चमकीले रंग की होती है। वह नर को रिझाती है और उसे पति बनाती है। अण्डे दे चुकने पर उन्हें छोड़ देती

है और दूसरे पति की खोज में निकलती है। वहां भी अण्डे देकर तीसरे को खोजती है और फिर चौथे को। इस प्रकार यह मादा पक्षी एक मौसम में ही अनेक बार अंडे देती है जिनकी देखभाल नर को करना पड़ती है।

धनेश पक्षी में पारिवारिक वात्सल्य का बहुत अच्छा नमूना देखने में मिलता है। जोड़ा बांधने के बाद मादा धनेश किसी पेड़ के खोके में जाकर बसती है, वहां उसके सभी पंख गिर जाते हैं और उसके लिये मुलायम गद्दी बन जाते हैं। फिर ये खोके को मिट्टी, सीमेंट, प्लास्टर आदि से बंद कर देते हैं। केवल एक छेद रखते हैं जिसमें से नर, मादा को भोजन पहुचाता है। इस प्रकार की जेल की जिंदगी मादा उस समय तक बिताती है जब तक कि उनके बच्चे १५–२० दिन के नहीं हो जाते। बाद में मादा कृत्रिम दीवाल को फोड़ देती है। उसके पंख उस समय तक पुनः पैदा हो जाते हैं। मादा के निकल चुकने पर दीवाल फिर बना दी जाती है और तब नर और मादा, दोनों ही अपने बच्चों के लिये भोजन लाते हैं जब तक कि वे बड़े नहीं हो जाते

धनेश अकेले में ही क्यों, प्रायः सभी पक्षियों में अपने बच्चों के प्रति प्रेम होता है। अण्डों को सेने का काम या तो मादा अकेली या नर और मादा पारी पारी से अण्डों पर बैठकर करते हैं। बच्चों के अण्डे से निकलने पर पक्षियों को बहुत व्यस्त हो जाना पड़ता है। नर और मादा दोनों उनके लिये खुराक लाते हैं और नरम से नरम भोजन खिलाते हैं। बच्चे जब कुछ बड़े हो जाते हैं, तो उन्हें उड़ने की शिक्षा दी जाती है। शीघ्र ही वे इसमें कुशल हो जाते हैं और तब वे आकाश में अपने मां बाप की तरह विचरने लगते हैं।

पक्षियों का वर्गीकरण

जैसा कि ऊपर बताया गया है, हमारे देश में लगभग २४०० किस्म की चिड़ियां पाई जाती हैं। इन्हें वैज्ञानिकों ने ग्यारह वर्गों में बांटा है जो पुनः परिवार, उपपरिवार और जातियों में बांटे गये हैं। पक्षियों के ग्यारह वर्ग निम्न प्रकार हैं।

१ वंजुलवर्ग—इस वर्ग में वे पक्षी रखे गये हैं जिनका अधिकतर समय पानी में ही बीतता है, जैसे पनडुब्बियां।

२ समुद्र काक वर्ग—इसमें समुद्र के निकट रहने, समुद्री लहरों पर पनडुब्बियों की तरह तैरने और समुद्र के ऊपर उड़ते रहने वाले पक्षी सम्मिलित हैं।

३ महाबक वर्ग—इसमें पानी में रहने वाले अथवा पानी क निकट रहने वाले उन पक्षियों को वर्गीकृत किया गया है जो पानी के भीतर मछलियों की तरह तैरते हैं अथवा कीचड़ में पड़े रहते हैं।

४ हंस वर्ग—इस वर्ग के पक्षी प्रायः जालपाद होते हैं और अपना अधिक समय पानी में ही बिताते हैं। उनमें बत्तखें, हंस आदि सम्मिलित हैं।

५ श्येन वर्ग—शिकारी पक्षी, जैसे बाज, आदि तो इसमें हैं ही, साथ में गिद्ध और चील जैसे पक्षी भी सम्मिलित किये गये हैं।

६ मयूर वर्ग—इसमें मोर, मुरगी, तीतर, बटेर, आदि चिड़ियां है जिनका शिकार किया जाता है।

७ क्रौञ्च वर्ग—इसमें लम्बी टांगों वाले पक्षी आते हैं। ये पानी के निकट ही अपना अधिकांश समय बिताते हैं। सारस इनमें प्रसिद्ध प्राणी है।

८ तटचारी वर्ग—इस वर्ग में कबूतर, टिटहरी, चहा, कुररी, आदि पक्षी शामिल है जिनका अधिक समय नदी, तालाब या अन्य जलाशयों के आसपास बीतता है।

९ शुकपिक वर्ग—नाम से ही स्पष्ट है कि इस वर्ग में तोता और कोयल जैसे पक्षी हैं।

१० कीटभक्षी वर्ग—कीड़े मकोड़े खाकर अपना पेट भरने वाले पक्षी, जैसे उल्लू, कौडिल्ले, पतेने, धनेश, बसंता, हुदहुद, नीलकंठ, अबाबिल, आदि इसमें सम्मिलित हैं।

११ शाखाशायी वर्ग—यह वर्ग पक्षियों के सब वर्गों से बड़ा है। इसमें उन सब पक्षियों को रखा गया है जो रात में पेड़ों पर बसेरा लेते हैं और जिनका अधिकांश समय पेड़ों पर ही बीतता है। जैसे कौआ, मैना, बुलबुल, शकरखोर, मुनियां, तूती आदि आदि।

उपरोक्त ग्यारह वर्गों के प्राणी, अनेक परिवारों में विभक्त हैं और एक एक परिवार में भी बहुत सी जातियों के पक्षी सम्मिलित होते हैं। संग्रहालय में पक्षियों की थोड़ी सी ही जातियों का संग्रह हो पाया है। जिनका संग्रह हो चुका है उनमें से भी प्रत्येक का अलग अलग परिचय विस्तारभय से यहां देना संभव नहीं है। दूसरे, यह भी आवश्यक जान पड़ता है कि जो पक्षी संग्रहालय की दीर्घा में प्रदर्शित नहीं है किन्तु हमारे परिचित हैं या जिनके विषय की जानकारी हमारे लिये उपयोगी है, उन्हें भी निम्न लिखित विवरण में सम्मिलित कर लिया जाय। अतएव अलग अलग पक्षी का विवरण न देते हुये उनके परिवारों के विषय में संक्षिप्त सूचनाएं मात्र देने का प्रयत्न यहां किया जाता है।

पनडुब्बी परिवार

इस परिवार की बड़ी पनडुब्बी कद में बड़ी होती है और उत्तर भारत की झीलों में काफी संख्या में निवास करती है। छोटी पनडुब्बी हमारे देश के सभी जलाशयों में मिलती है।

उसके दुम नहीं होती। उसकी चोंच पतली, नोकीली और काली रहती है। पैर हरे गंदे रंग के होते हैं।

महाबक परिवार

इस परिवार के पक्षी लम्बी टांगवाले होते हैं। उनके शरीर की बनावट भारी होती है। वे कद में बगुलों से बड़े होते हैं। ये पक्षी बोलते नहीं हैं बल्कि लम्बी चोंच के अगले हिस्सों को लड़ाकर एक प्रकार की आवाज करते हैं। ये अपनी लम्बी गरदन को मोड़कर पीठ पर रख लेते हैं। इनमें से लगलग नामक पक्षी की गरदन सफेद, माथा और सिर का ऊपरी हिस्सा काला और बाकी सारा बदन धुर काला होता है। उसकी चोंच लम्बी और काली तथा लम्बी टांगें लाल होती हैं। जांघिल की चोंच पीली होती है तथा कंधे और डैने के पर गुलाबी। घोंघिल की चोंच के बीच में कुछ दूर तक एक संधि सी रहती है। गैबर जाति का महाबक लाल चोंच और लाल ही टांगों वाला होता है।

बक परिवार

इस परिवार के प्राणियों को हम बगुला नाम से जानते हैं जो छिछले पानी के किनारे मछली, मेंढ़क तथा कीड़े-मकोड़ों को पकड़ते दिखाई देते हैं। बगुलों की अनेक जातियां हमारे देखने में आती है। आंजन बगुला का सिर, गरदन और नीचे का हिस्सा सफेद रहता है और सीने पर के कुछ पर काले होते हैं। इनका शिकार का उपयुक्त समय सुबह-शाम है। ये पानी के किनारे गरदन सिकोड़े चुपचाप खड़े रहते हैं, जैसे सो रहे हों, पर मछली आदि के आते ही फुरती से उस पर झपट पड़ते हैं। इनके झुंड के झुंड एक ही पेड़ पर रात में बसेरा करते हैं। अंधा बगुला भी तालतलैयों के किनारे बैठा रहता है और मेंढ़क-मछली पकड़ता है। इसकी नोकीली चोंच पीली होती है जिसका सिरा काला और जड़ कलछौंह होती है। पैर गहरे हरे रंग के होते हैं। गाय बगुला को सफेद बगुला कहते हैं क्योंकि इसका सारा शरीर धुर सफेद होता है। जोड़ा बांधने का समय आने पर इसके सिर, सीने और पीठ के महीन पर सुनहरे रंग के हो जाते हैं। इस बगुले की चोंच पीली और पैर काले होते हैं। इसका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े हैं, पर मौका पड़ने पर वह मछली और मेंढ़क भी खा लेता है।

बुज्जा परिवार

इस परिवार के पक्षी शकल सूरत में बगुलों से मिलते हैं पर इनकी चोंच झुकी हुई और टेढ़ी होती है। इनकी आवाज तेज और कर्कश होती है। काला बुज्जा और सफेद बुज्जा ऐसी इनकी दो जातियां सुप्रसिद्ध हैं। सफेद बुज्जा काले बुज्जे से कद में कुछ बड़ा होता है और उसका रंग भी साफ और सुन्दर होता है।

हंसावर परिवार

हंसावर परिवार में हंसावर या फ्लेमिन्गो अकेला ही प्राणी है जो हंस के बराबर सुन्दर तो नहीं होता फिर भी काफी सुन्दर होता है। ये मौसमी पक्षी है और जाड़ों के प्रारंभ में पश्चिम से आकर गरमी शुरू होते होते उसी ओर फिर वापस चले जाते हैं। इनके सिर, गरदन, दुम और बदन का कुल हिस्सा सफेद रहता है जिसमें गुलाबी झलक होती है। डैनों का ऊपरी हिस्सा लाल होता है। चोंच गुलाबी किन्तु उसका सिरा लाल होता है। टांगे भी लाल और लम्बी होती हैं। ये पक्षी प्रायः झुंड में रहते हैं और इन्हें कीचड़ में रहना अधिक पसंद है।

जलकाक परिवार

इस परिवार में जल कौआ जैसे पक्षी आते हैं जो पानी के भीतर मछलियों की तरह फुर्ती से तैर लेते हैं।

हंस परिवार

हंस परिवार में हंस तो सम्मिलित हैं ही, छोटी बड़ी सभी प्रकार की बत्तखें भी आ जाती हैं। हंस हमारे देश का सबसे सुन्दर पक्षी है किन्तु यह काश्मीर तरफ ही रहता है। हां, इस परिवार की बत्तखें अवश्य जहां तहां पाई जाती हैं। इन बदकों में से कुछ तो मौसमी चिड़िया हैं और कुछ बारहमासी। सुरखाब नाम की बदक को साहित्य में भी स्थान मिला है जिसे चक्रवाक, कोक या चकई भी कहते हैं।

श्येन परिवार

इस परिवार का सबसे बड़ा शिकारी पक्षी है गरुड़, किन्तु वह हिमालय के उच्च प्रदेशों में ही रहता है। एक छोटा गरुड़ या उकाब भी होता है जो शकल सूरत में चील से मिलता जुलता है। वह सुन्दर तो होता ही है, उसकी शकल से बहादुरी भी टपकती है। उसके पंजे इतने मजबूत होते हैं कि वह उनसे खरगोश तक को उठा ले जाता है।

बाज को जंगलों म रहना पसंद है; वह मैदान म रहना पसंद नहीं करता। इस पक्षी का अधिक समय आकाश में उड़ने में ही बीतता है। इसकी मादा नर से कद में बड़ी होती है। बाज जब नीचे कोई शिकार देख पाता है तो उस पर इतनी तेजी से टूटता है कि शिकार को इसके चुंगल से बचना कठिन हो जाता है।

शिकरा को छोटा बाज भी कहते हैं क्योंकि यह बहुत बहादुर होता है। सिखाये जाने पर यह अपने से चौगुने पक्षियों को पकड़ लेता है। शिकरा का रंग बाज जैसा न होकर पपीहे जैसा होता है।

तुरमुती नाम की चिड़िया को चिड़ियामार भी कहते हैं। यह हमारे यहां की बारहमासी चिड़िया है जो घने जंगलों की अपेक्षा बाग-बगीचों में अधिक रहती है। यह बहुत तेज होती है। लोग इसे सिखाकर इससे मैना, हुदहुद, फाख्ता आदि चिड़ियों को पकड़वाते हैं। तुरमुती की मादा नर से बड़ी होती है। इनका मुख्य भोजन छोटी छोटी चिड़ियां है।

चील से हम भली भांति परिचित हैं। सड़क पर चलते चलते हमारे हाथ से खाने की वस्तु ये झपट्टा मारकर छीन ले जाती हैं। इसका उड़ना और इसकी फुरती दोनों ही आश्चर्य की वस्तु हैं। चील सर्वभक्षी पक्षी है। वह छोटे छोटे पक्षी, सरीसृप और कीड़े-मकोड़ों के साथ मुर्दा प्राणियों को भी खा लेता है।

गृद्ध परिवार

गृद्ध परिवार में सभी प्रकार के गिद्ध आते हैं जो अपनी मुर्दा खाने की आदत के लिये सुज्ञात हैं। गिद्धों की दृष्टि सब पक्षियों से अधिक तेज होती है। इनकी चोंच टेढ़ी और मजबूत होती है। इनके पंजे और नाखून शिकारी पक्षियों के जैसे मजबूत और तेज नहीं होते। गिद्ध भद्दे और बदशकल होते हैं, साथ ही गंदे भी होते हैं। गिद्धों की कई जातियां हमारे देश में पाई जाती हैं उनमें चामर गिद्ध राजगिद्ध, गोबर गिद्ध आदि हैं।

मोर परिवार

इस परिवार के पक्षी अपनी सुंदर पोशाक के लिये प्रसिद्ध हैं। ये जमीन पर तेजी से दौड़ लेते हैं और खतरा आने पर फौरन हवा में उड़ जाते हैं। मोर परिवार में मोर के अलावा जंगली मुरगी, तीतर, बटेर और लवा जैसे पक्षी सम्मिलित हैं।

मोर की पोशाक राजसी होती है। उसकी मखमल जैसी गरदन और लंबी सतरंगी दुम, दोनों देखने में बड़े सुन्दर लगते हैं। सिर पर सुन्दर कलगी होती है। मोर जब अपनी दुम को गोलाकार फैलाकर नाचते हैं तब उनकी शोभा देखते ही बनती है। सबसे विशिष्ट बात दो यह है कि यह सुन्दर पक्षी हमारे ही देश का है। दूसरी विशेष बात यह है कि केवल नर ही इतना सुन्दर होता है जबकि मादा भद्दी और बदरंग होती है। मोर सभी कुछ खा लेता है, दाना, गल्ला, कीड़े-सकोड़े छिपकली और सांप तक उसके भोजन हैं। मोर अन्य चिड़ियों की भांति जोड़ा नहीं बांधता बल्कि इनमें एक नर के साथ कई मादाएं रहा करती हैं।

जंगली मुरगी रूप रंग में पालतू मुर्गी जैसी ही होती है पर उसके सिर पर लाल कंघीनुमा मांस की चोटी रहती है तथा गरदन के नीचे भी मांस की लाल थैली सी लटकती रहती है। इनमें नर और मादा का रूप रंग अलग अलग होता है।

तीतर को लोग अक्सर लड़ाने के लिये पालते हैं। ये प्राणी सूखे स्थानों में रहना पसंद करते हैं और हवा में उड़ने की अपेक्षा जमीन पर ही भागते हैं। यह बारहमासी पक्षी है। इसके नर और मादा एक शक्ल सूरत के होते हैं पर नर की टांगों में एक एक खार रहता है जिसे वह लड़ने के समय इस्तेमाल करता है। तीतर प्रायः जोड़े में रहते हैं। ये घोंसला नहीं बनाते बल्कि मादा किसी झाड़ी में छिछला गढ़ा बनाकर और उसमें घास फूस रखकर ६ से ९ तक अण्डे देती है।

बटेर का रहन सहन और शकल सूरत तीतर से मिलती है। य भी तीतरों की तरह लड़ाने के लिये पाले जाते हैं।

लवा बटेर से भी छोटा होता है और खेत के आसपास की घास में रहता है। ये १०–१२ के गिरोह में निकलते हैं और आहट पाते ही फौरन छिप जाते हैं।

क्रौञ्च परिवार

क्रौञ्च परिवार के प्राणियों की टांगे लम्बी होती हैं। इनकी गरदन भी लम्बी होती है पर इनकी चोंच महाबकों जैसी लम्बी नहीं होती। इसके अलावा इनकी चोंच में घरारे कटे रहते हैं। इस परिवार के पक्षी झुंड में रहते हैं। उनमें से कुछ जोड़ा बांधकर अलग अलग भी हो जाते हैं। ये न तो वृक्षों पर बैठते हैं और न वृक्षों पर अपना घोंसला ही बनाते हैं। इनका घोंसला जमीन पर ही होता है जो देखने में घास पात का ढेर सा दिखता है।

क्रौञ्च परिवार का सारस पक्षी हमारे देश का सबसे बड़ा पक्षी है। इसका कद पांच फुट होता है और यह हर कहीं किसी भी तालाब में रहता है। इनकी बोली कर्कश होती है। उड़ने के लिये इन्हें कुछ दूर तक जमीन पर दौड़ना पड़ता है और जब हवा में उठ जाते हैं तो भी बहुत ऊंचे तक तहीं जाते। सारस के संबंध में कहा जाता है कि यदि इनका जोड़ा फूट जाता है तो फिर ये जीवन भर जोड़ा नहीं बांधते।

जलकुक्कुट परिवार

इसमें सभी जल-मुरगियां सम्मिलित की गई हैं जो ज्यादातर पानी में अथवा पानी के किनारे रहती हैं।

डाउक हमारी बारहमासी चिड़िया है जो बस्ती के निकट के तालाबों के पास के स्थानों को अपना निवास स्थान बनाती है। जलमुरगी भी उसी प्रकार बारहमासी है, वह भी तालों और अन्य पानी के स्थानों के निकट रहती है। पानी में तैरते समय इसकी दुम उठी रहती है। जमीन पर भागते समय भी यह अपनी दुम उठाये रहती है। इसके अलावा इसकी सबसे

बड़ी पहचान है, इसकी चोंच की जड़ के पास का एक लाल चित्ता। जलमुरगी वैसे तो पानी और जमीन दोनों में ही आसानी से रह लेती है पर उसका करीब करीब सारा दिन पानी में ही बीतता है। वह पानी में डुबकी लगाने में भी कुशल होती है और तैरने में भी।

जलबोदरी के नर और मादा एक रंग के होते हैं। ये गिरोह में रहती हैं और घास वगैरह से भरे हुये तालों को अधिक पसंद करती है। ये उड़ती कम हैं और यदि उड़ना ही पड़ा तो एक जगह से उड़कर थोड़ी दूर पर ही फिर उतर पड़ती हैं। टिकरी एक दूसरी चिड़िया है जिसकी आदतें और शकल सूरत जलबोदरी जैसी होती हैं। पर यह उससे कद में छोटी होती है। यह पानी पर कुछ दूर दौड़कर फिर ऊपर उठती है।

टिटहरी परिवार

के प्राणी अक्सर पानी के किनारे इधर उधर दौड़ते देखे जाते हैं। ये छोटे कद के होते हैं। वे जमीन पर तो तेजी से दौड़ते ही हैं हवा में भी तेज उड़ लेते हैं। इनमें से कुछ तो मौसमी पक्षी हैं और कुछ बारहमासी। इनमें से बटान हमारा परिचित मौसमी पक्षी है जो जाड़े में आता है। जीरा नाम की टिटहरी बारहों महीनें हमारे यहां रहती है। वह नदियों और तालाबों के किनारे जोड़े में दिखाई देती है लेकिन कभी कभी उसके तितरे-बितरे झुंड भी दिखाई पड़ जाते हैं। यह पक्षी कीड़ों के लिये कीचड़ को अपने पंजों से मथती है ताकि कीड़े ऊपर आ जाएं।

टिटहरी की एक अलग ही जाति है। यह पक्षी १२–१३ इंच लम्बा होता है और हमारे यहां का बारहमासी पक्षी है। इनके नर और मादा एक ही रंग के होते हैं और प्रायः साथ ही जलाशयों के किनारे टहलते रहते हैं। टिटहरी का मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े आदि हैं। इनकी मादा रेत या खुले मैदान में अण्डे देती है।

चहा पक्षी का शिकार बहुत होता है। वह दलदल वाले जलाशयों के किनारे पाया जाता है। यह मौसमी पक्षी है, सितम्बर में इस तरफ आते हैं और मई के शुरू होते ही फिर लौट जाते हैं। इनकी चोंच लम्बी और आगे की ओर गोल होती है जिससे ये कीचड़ के कीड़े पकड़ते हैं। चोंच के उपरी हिस्से में निचला हिस्सा इस तरह डिबिया की तरह चिपक कर बैठता है कि कीचड़ तो छन कर बाहर निकल जाता है और कीड़े चोंच के भीतर ही रह जाते हैं। चहा चितकबरा होता है। आहट पाते ही ये पहले तो जमीन पर भागते हैं, फ़िर सीधे ऊपर की ओर उड़ते हैं और उसके बाद कुछ दूर जाकर हरियाली में छिप जाते हैं।

नुकरी परिवार

इस परिवार के पक्षी चहा से मिलते जुलते हैं पर उनकी टांगें कुछ लम्बी होती हैं। नुकरी की पोशाक रंगीन होती है। यह चिड़िया मैदानों में घूमती रहती है। इसका सिर तो

गाढ़े ललछौंह भूरे रंग का होता है और नीचे का भाग नारंगी भूरे रंग का। नुकरी की आदत है कि जब वह खतरा देखती है तो उड़ने की अपेक्षा जमीन पर ही अधिक भागती है और बड़ी तेजी से भागती है। ज्यादा खतरा होने पर उड़ती भी है। पर थोड़ी दूर ऊंचाई पर उड़ कर सौ पचास गज बाद फिर जमीन पर उतर कर दौड़ने लगती है।

जलमखानी परिवार

इसमें केवल एक जाति के प्राणी हैं जो जलमखानी कहलाते हैं। इनके पैर की उंगलियां लम्बी होती हैं। ये कमल के पत्तों पर घूमते देखे जाते हैं। अपनी लम्बी उंगलियों के कारण पत्तों पर भी इस तेजी से दौड़ते हैं जैसे जमीन पर दौड़ रहे हों। जलमखानी को करटिया भी कहते हैं। इनका मुख्य भोजन पानी के पौधों की जड़, बीज आदि हैं। इसके अलावा ये कीड़े मकोड़ों को भी खा लेते हैं।

कपोत परिवार

इस परिवार में सभी प्रकार के कबूतर, फड़कियां और हारिल पक्षी रखे गये हैं। ये पक्षी पेड़ों पर रहना पसंद करते हैं और दाना तथा फल खाते हैं। इनके झुंड के झुंड देखे जाते हैं।

कबूतर सभी जगह मिलता है। इसके नर और मादा का रंग एक सा ही होता है। इसके शरीर का रंग सलेटी रहता है पर गरदन पर चमकीला और हरा कंठा सा रहता है जिसके नीचे एक बैंगनी पट्टी रहती है। दुम का सिरा काला होता है और उसके दोनों बगल सफेद धारी रहती है। कबूतर को देखा गया है कि रात में प्रायः पेड़ों पर बसेरा नहीं करते बल्कि मकानों या ऊंची कगारों की दराज में रहते हैं। ये अक्सर झुंड में ही रहते हैं। घोंसला बनाना तो जैसे इन्हें आता ही नहीं। मादा थोड़ा सा घास फूस रखकर उसमें अण्डे दे देती है। कबूतरों की अब अनेक जातियां बन गई हैं जिनमें कुछ सफेद या चित्तीदार भी हैं। शीराजी कबूतर कद में बड़े होते हैं और सुन्दरता में सबसे बढ़कर। लोटन कबूतर को हाथ में लेकर जमीन पर उलट कर छोड़ दीजिये तो वह लोटता ही रह जाता है। कबूतर दूर तक डाक ले जाने के लिये भी प्रसिद्ध हैं। इनकी विशेषता है कि ये सैकड़ों मील दूर चले जाने पर भी अपनी पूर्व जगह पर लौट आते हैं।

फाख्ता भी कबूतर के समान भोली और सीधी चिड़िया है। वह जंगल और खुले मैदान दोनों में रहती है और अक्सर बबूल जैसे पेड़ों पर दिखाई देती है। फाख्ता कई तरह की होती हैं। पर उनकी सब आदतें एक सी होती हैं। फर्क यदि है तो केवल शकल सूरत का।

हारिल पक्षी भी कई प्रकार के होते हैं। इनकी मुख्य खुराक फल है। इसलिये इन्हें जमीन पर उतरने का अवसर कम ही आता है। हारिल कद में कबूतर के बराबर होने पर भी उससे तगड़ा होता है और रंग में भी उससे ज्यादा सुन्दर होता है। हारिल का घोंसला ऊंचे पेड़ पर होता है जो सूखी टहनियों से बनाया जाता है।

पिक परिवार

इस परिवार में कोयल को प्रथम स्थान प्राप्त है। वह मीठी बोली बोलती है। वसन्त के बाद कोयलों के झुंड बहुत दिखाई पड़ते हैं जो अपनी मीठी बोली बोलकर गरमी के आगमन की सूचना देते हैं। नर कोयल धुर चमकीला काला होता है पर मादा भूरे रंग की होती है जिसमें सफेद चित्तियां और धारियां होती हैं। कोयल फल खाती है इसलिये पेड़ों पर ही रहती है। इसकी मादा जून महीने में अण्डे देती है पर स्वयं घोंसला नहीं बनाती, और न ही नर घोंसला बनाता है। ये कौए के घोंसले में अपने अण्डे रख देते हैं जहां इनके बच्चों का पोषण होता है। यह कैसे होता है वह भी बड़ा दिलचस्प है। कौआ अपने अण्डों को कभी अकेला नहीं छोड़ता। नर या मादा कोई न कोई अण्डों पर बैठा ही रहता है। इससे कोयल को उसे धोखा देना पड़ता है। नर कोयल जिसकी शकल कौए जैसी होती है, कौए के घोंसले के पास जाकर उत्पात मचाता है। तब वहां के सभी कौए जिनमें अण्डा देने वाली मादा भी शामिल होती है, नर कोयल को खदेड़ते हैं। कोयल भागता है और तेज उड़ने के कारण कौओं की पकड़ में नहीं आता बल्कि उन्हें यहां वहां दौड़ाता है। इसी बीच मादा कोयल कौए के घोंसले में जाकर उसके अण्डों को गिराकर स्वयं अण्डे दे आती है।

पपीहा पिक वर्ग का दूसरा पक्षी है जो हमारा परिचित है। यह भी पेड़ों पर ही रहता है और 'पी कहां पी कहां' बोलता है।

कुक्कू इस परिवार का तीसरा पक्षी है जिसकी कई जातियां हमारे देश में हैं। यह अपना सारा समय पेड़ पर ही बिताती है लेकिन इसकी बोली शीघ्र ही पहचान ली जाती है। कुक्कू को यूरोप के साहित्य में उतनी ही प्रसिद्धि मिली है जितनी हमारे देश के साहित्य में कोयल को। मादा कुक्कू अपना निज का घोंसला नहीं बनाती बल्कि दूसरे पक्षी के घोंसले में अण्डे देती है।

शुक परिवार

इस परिवार में सभी प्रकार के छोटे बड़े तोते आते हैं जिनका रंग प्रायः हरा होता है और जो फल-फूल, गल्ला आदि खाते हैं। कुछ तोते कीड़े, मकोड़े और छिपकली भी खा जाते हैं। ये अक्सर झुंड में रहते हैं। तोतों को लोग पिंजड़ों में बंद करके पालते हैं क्योंकि

ये मनुष्य की बोली की नकल करने में होशियार होते हैं। इनकी चोंच बड़ी तेज होती है। अपने यहां का टुइयां तोता प्रसिद्ध है जो हरे तोते से कुछ छोटा होता है। दोनों की आदतें एक सी होती हैं। तोते घोंसले नहीं बनाते। इनकी मादा पेड़ के खोके में अण्डे देती है।

नीलकंठ परिवार

इस परिवार के पक्षी नीलकंठ को देखना शुभ माना जाता है। वह बारहमासी पक्षी है और मैदानों में रहता है तथा कीड़ों-मकोड़ों की तलाश में दिनभर खेतों में घूमता रहता है। नीलकंठ को देखो तो बड़ा सुस्त दिखाई देता है पर इसमें तेजी इतनी होती है कि जैसे ही कोई कीड़ा जमीन पर दिखा, यह उसे फौरन कूदकर मजे से पकड़ लेता है। नीलकंठ के जोड़ा बांधने का किस्सा भी मजे का है। नर, मादा को खुश करने के लिये अपने करतब दिखाता है। पहले वह ऊपर उड़ जाता है, फिर नीचे की ओर ऐसा गिरता है मानो मर गया हो किन्तु जमीन पर आने से पहले ही वह संभल जाता है और फिर ऊपर उड़ जाता है। इस प्रकार जब मादा खुश हो जाती है तो जोड़ा बांधकर दोनों घोंसला बनाने की फिकर में लग जाते हैं।

कौडिल्ला परिवार

इस परिवार के पक्षी लम्बी और नोकीली चोंच वाले होते हैं। वे मछली पकड़ते हैं। पानी के ऊपर हवा में एक जगह काफी देर तक पंख मारकर ठहरे रहते हैं और नीचे पानी में मछली को देखते ही उसपर कूद पड़ते हैं। लेकिन इसी परिवार के किलकिला पक्षी का कुछ दूसरा ही ढ़ंग है। उसका भोजन मछली नहीं है। वह पेड़ की डाल पर बैठा रहता है और जहां कोई शिकार दिखा कि नीलकंठ की तरह उस पर टूट पड़ता है और उसे खा जाता है। किलकिला का रंग चटकीला होता है।

पतेना परिवार

पतेना हरे रंग की पतली सी चिड़िया है जो दिन भर हवा में उड़ा करती है। इसे जंगल, मैदान, बाग-बगीचे पसंद हैं, जहां यह अपने छोटे छोटे पंख फैलाकर पतिंगों की फिराक में उड़ा करती है। यह उड़ते ही उड़ते शिकार कर लेती है। पतेने गोल बांधकर पेड़ पर बसेरा करते हैं पर अण्डा देने के समय वे मिट्टी खोदकर कगारों में बिल बना लेते हैं। बिलों के भीतर मादा अप्रैल से जून तक तीन से पांच तक सफेद अण्डे देती है।

हुदहुद परिवार

इस परिवार में हुदहुद की कई जातियां सम्मिलित हैं। इन पक्षियों के सिर पर एक कलगी रहती है। यह कलगी जमीन खोदकर कीड़े खाते समय तो दबी रहती है। पर पक्षी के जरा

सा भी चौकन्ना होने पर पंखीनुमा हो जाती है। हुदहुद जब खतरा देखता है तो अक्सर जमीन पर पंख फैलाकर लेट जाता है जहां इसके शरीर की धारियां और भूरा रंग मिट्टी में ऐसा मिल जाता है कि दिखाई नहीं पड़ता। यह उड़ने में भी तेज होता है। इसका घोंसला किसी वीरान खंडहर की फर्श; छज्जे या खोखले स्थान में थोड़ा सा घास फूस वगैरः रख देने से ही बन जाता है। मादा उसी पर अण्डे दे देती है और जब तक अण्डे फूट नहीं जाते, वह उनके पास ही रहती है। इस बीच में नर उसे खाना ला ला कर देता है।

धनेश परिवार

धनेश पक्षी अपनी लम्बी और विचित्र बनावट वाली चोंच के कारण आसानी से पहचान में आ जाता है। उसकी चोंच भीतर से पोली होती है और उसमें इतनी हलकी हड्डियां रहती हैं कि बड़ी होने पर भी भारी नहीं होती। इसका मुख्य भोजन कीड़े मकोड़े, छोटे छोटे जीव जन्तु और चिड़ियां भी हैं। इसके घोंसले के संबंध में ऊपर कहा जा चुका है।

उल्लू परिवार

इस परिवार के प्राणी रात्रि में विचरण करते हैं। इनकी आंख अन्य पक्षियों की तरह सिर के दोनों बगल न होकर मनुष्यों की तरह सामने होती है जिससे ये केवल सामने ही देख सकते हैं। लेकिन ये अपनी गरदन को दोनों बगल आसानी से घुमा सकते हैं। उल्लू के पर इतने मुलायम होते हैं कि रात में उड़ते समय जरा भी आवाज नहीं होती। उल्लू की जातियों में मुआ और घुग्घू मुख्य हैं। मुआ तो पानी के करीब रहते हैं और घुग्घू पुराने पेड़ों पर या खंडहरों में रहते हैं।

घुग्घू की आवाज बड़ी अशुभ मानी जाती है। इसका सारा शरीर भूरा होता है और डैने भी उसी प्रकार भूरे होते हैं। इसकी आंख की पुतली पीली तथा चोंच सींग के रंग की होती है। पैर रोंएंदार तथा काले होते हैं। घुग्घू रात में पेड़ों पर सोते हुये कौओं के अण्डों पर आक्रमण करता है।

खूसट कद में छोटा और रंग में चितकबरा होता है। इसका सिर और आंखें बड़ी तेज होती हैं और चोंच की जड़ से लेकर आंख के ऊपर तक सफेद रंग की भौं सी बनी रहती है। खूसट बड़े ढीठ होते हैं। ये पुराने मकानों के सुराखों में चार पांच एक साथ रहते हैं। लेकिन अण्डा देने के समय जोड़ा बांधकर रहने लगते हैं।

करैल जाति के उल्लू का चेहरा पान के आकार का होता है। इसका जोड़ा बांधने का समय बारहों महीने रहता है।

कठफोर परिवार

इस परिवार के कठफोर पक्षी की बहुत सी जातियां होती हैं जो पेड़ की पपड़ियों को ठोंकते रहते हैं ताकि उनके नीचे के कीड़े ऊपर आ जायं और इनकी लम्बी जबान वहां तक पहुंच सके। कठफोर की जबान चिपचिपी होती है। उसको छूते ही कीड़े उसमें चिपक जाते हैं और फिर सीधे उसके पेट में पहुंच जाते हैं। कठफोर बाग में, पेड़ों के तनों पर चिपका देखा जाता है। इसका घर बनाने का ढंग निराला है। अण्डे देने के समय, किसी मोटे पेड़ के तने में अपनी नोकीली चोंच से इतना बड़ा सुराख बना लेता है कि वह उसमें जा सके। भीतर ही भीतर छेद को और बड़ा कर लिया जाता है और तब मादा उसमें बैठकर तीन चार सफेद अण्डे देती है।

बसंता परिवार

इस परिवार में बसंता और ठठेरा दो जाति के पक्षी सुप्रसिद्ध हैं। बसंता हरे रंग का होता है। इसकी खुराक पीपल, बरगद आदि के फल हैं। इसलिये इसे जमीन पर उतरने की आवश्यकता नहीं होती।

ठठेरा बसंता से छोटा होता है। इसलिये उसे छोटा बसंता भी कहते हैं। यह पक्षी भी फलों से ही अपना पेट भरता है; इसलिये नीचे नहीं आता। जब ये बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि कोई ठठेरा काम कर रहा है।

फुलचुही परिवार

इस परिवार में सभी जाति की फुलचुहियां सम्मिलित हैं जिनकी चोंच टेढ़ी और छोटी होती है। ये कद में भी बहुत छोटी होती हैं। ये उड़ते ही उड़ते फूलों का रस चूस लेती हैं और उसके साथ फूलों के कीड़ों को भी खा जाती हैं।

शकरखोर परिवार

शकरखोरे भी फूलों का रस चूसते हैं पर वे कद म फुलचुही से बड़े होते हैं। ये अपनी पतली और नोकीली चोंच को फूलों में गड़ा देते हैं तथा अपनी लम्बी जबान से फूलों का रस चूसते हैं। शकरखोरा लगभग चार इंच का पक्षी है।

भरत परिवार

इस परिवार में मैले रंग के छोटे छोटे पक्षी हैं जो अधिकर जमीन पर ही रहते हैं और अण्डे भी जमीन पर देते हैं। भरत पक्षी विदेशों में भी पाया जाता है। अंग्रेजी साहित्य में इस पक्षी को बहुत सम्मान मिला है। इसका अंग्रेजी नाम स्काई लार्क है। भरत की एक और

जाति हमारे देश में होती है जिसे चंडूल कहते हैं। उसकी मीठी बोली के लिये लोग उसे पालते हैं।

खंजन परिवार

इस परिवार के पक्षी भरत परिवार के समान अपना अधिक समय जमीन ही पर बिताते हैं। ये पानी के निकट रहना पसंद करते हैं। खंजन चितकबरा होता है और अपनी चंचलता के लिये प्रसिद्ध है। चचरी चिड़िया, जो इसी परिवार की है, कद और रूप रंग में मादा गौरेया से मिलती जुलती है।

अबाबील परिवार

इस परिवार के पक्षी दिन भर हवा में उड़ते रहते हैं। ये कीटभक्षी होते हैं और हवा में उड़ते उड़ते ही कीड़े पकड़ लेते हैं। इनके डैने बढ़कर इनके शरीर से बड़े हो गये हैं। इसलिये ये अपने घोंसले से हवा में कूदकर आकाश में उड़ने लगते हैं और फिर वहीं से अपने घोंसले में आकर घुस जाते हैं। यदि ये जमीन पर उतर जाते हैं तो इन्हें ऊपर उठने में दिक्कत होती है। इनके घोंसले मिट्टी के बनते हैं और पुराने मकानों में झुंड के झुंड दिखाई देते हैं। अबाबील जब प्रवास पर बाहर आता है तो उसकी रफ्तार ७०–८० मील प्रति घण्टे होती है।

तूती परिवार

इस परिवार में तूती, गौरैया और पथरचिरटे शामिल हैं। तूती जाड़े में हमारे मैदानों में आती है किन्तु गरमियों में हिमालय के ऊंचे स्थानों में चली जाती है और वहीं पर अण्डे देती है।

गौरैया को हम दिन भर अपने घरों में घूमते देखते हैं। यह बारहमासी चिड़िया है। इसके घोंसले में हर महीने में अण्डे मिल जाते हैं। घोंसला घास-पूस, कागज़, ऊन आदि सभी चीजों के टुकड़ों से बनाया जाता है।

बया परिवार

इस परिवार के बया पक्षी को उसकी कारीगरी से बहुत अधिक प्रसिद्धि मिली है। वह गौरेया के बराबर ही छोटा होता है। किन्तु अपना घोंसला इतना सुव्यवस्थित और सुन्दर बनाता है कि देखते ही बनता है। इनके घोंसले बबूल आदि के पेड़ों पर तूंबी के शकल के लटकते रहते हैं जो सरपत, केला, कांस, आदि के पतले रेशों से बनाये जाते हैं। इनमें घुसने के लिये नीचे से रास्ता रहता है। भीतरी भाग में दो हिस्से होते हैं। एक तो वही जिसमें बाहर से आने का रास्ता होता है और दूसरा जिसमें कुछ ऊपर जाकर नीचे की ओर उतरना

होता है। यहां अण्डे रहते हैं। इस तरह किसी दुश्मन का अण्डे के खाने तक पहुंचना नहीं होता और बच्चे भी आंधी पानी से सुरक्षित रहते हैं।

तेलियर परिवार

इसमें देशी मैना की जाति के सभी पक्षी सम्मिलित हैं। तेलियर, मैना की ही जाति का है पर उसकी पोशाक चित्तेदार होती है। यह वैसे विदेश का पक्षी है किन्तु जाड़ों में हमारे यहां आता है और फिर जाड़ा समाप्त होते होते वहीं लौट जाता है। ये गरोह में रहते और जमीन के कीड़े मकोड़े चुनते रहते हैं।

देशी मैना को केवल मैना कहा जाता है। यह हमारे देश में बहुत प्रसिद्ध है। देशी मैना के नाम से हमारे बहुत से पक्षी पुकारे जाते हैं। वे सभी बारहमासी पक्षी हैं। इनका स्वभाव है कि रात में झुंड बनाकर बसेरा करते हैं पर दिन में जोड़े में ही रह लेते हैं। मैना में पवई मैना सबसे छोटी होती है पर उसकी बोली बड़ी सुरीली होती है। सुरीली बोली के कारण ये पक्षी पिंजड़े में बंदकर घरों में रखे जाते हैं।

मैना परिवार

इस परिवार में पहाड़ी मैनाएं सम्मिलित की गई हैं जो वृक्षों पर अपना समय बिताती ह। उनका रंग चमकीला काला होता है और बोली भी मीठी होती है। वैसे तो पहाड़ों पर रहती हैं पर जाड़ों में पहाड़ों से उतर कर मैदानों में आ जाती है।

पीलक परिवार

इस परिवार के पीलक पक्षी का रंग पीला होता है जो देखने में भला लगता है। ये वृक्षों पर ही अधिक समय बिताते हैं, जमीन पर नहीं उतरते। ये बरगद आदि के फलों के साथ कीड़े मकोड़े भी खाते हैं। अपना घोंसला घास फूस और पेड़ की छाल का बनाते हैं जो घने पेड़ की डाली से लटकता रहता है। पीपल की दो जातियां सुज्ञात है एक तो सुनहरी पीलक और दूसरी टोपीदार पीलक।

नीलमी परिवार

इस परिवार की नीलमी चिड़िया अपनी नीली पोशाक से पहचानी जाती है। इसके बदन का रंग इतना गहरा होता है, कि वह दूर से काला जान पड़ता है। एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाते समय ये एक प्रकार की 'वीट वीट' जैसी तेज आवाज करते हैं।

फुदकी परिवार

फुदकियों का परिवार बड़ा है और इनकी अनेक जातियां हैं। ये गौरेया के बराबर या उससे भी छोटी होती हैं। इनमें से दरजिन आदि कुछ फुदकियां अच्छे घोंसले बनाती हैं।

भुजंगा परिवार

इस परिवार के पक्षी काले होते हैं और उनकी दुम लम्बी, दो फांक की या टेढ़ी रहती है। भुजंगा जिसे अंग्रेजी में किंग क्रो या राजा कौआ कहते हैं, बड़ा बहादुर और साहसी पक्षी है। इसके अण्डों पर हमला करने पर यह चील और बन्दरों पर भी हमला कर देता है और उस समय उन्हें जान बचाकर भागना पड़ता है।

सहेली परिवार

इस परिवार के पक्षी कद में छोटे होते हैं और उनका रंग लाल, काला या लाल-पीला होता है। ये प्रायः सात-पांच के झुंड में रहते हैं इसलिये इन्हें सात सहेली भी कहा जाता है। सहेली शिकारी चिड़िया है। यह गौरेया के बराबर होती है, पर इसकी चोंच टेढ़ी और मजबूत होती है। सहेली की बोली मीठी नहीं होती।

लहटोरा परिवार

इस परिवार के पक्षी भी शिकार के लिये प्रसिद्ध हैं। ये कद में भले ही छोटे हैं पर शिकार करने में होशियार होते हैं। इन्हें कसाई चिड़िया भी कहा जाता है, क्योंकि जब ये कोई शिकार पकड़ते हैं तो उसे पेड़ के किसी मजबूत कांटे से अटका देते हैं और फिर अपने पंजों से नोंच नोंच कर उसे खाते हैं।

मछमरनी परिवार

मछमरनी परिवार में मछमरनी जाति का एक पक्षी शाह बुलबुल या दूधराज के नाम से प्रसिद्ध है। उसकी शकल बुलबुलों जैसी होती है और दुम लम्बी होती है। इन्हें दूधराज इसलिये कहते है कि उनकी पोशाक सफेद होती है। दूधराज देखने में सुन्दर लगता है और पेड़ पर रहता है। यह उड़ते उड़ते पतंगों को पकड़ कर खाता है। इसकी मादा का रंग बादामी होता है और नर भी दो तीन साल की अवस्था तक बादामी ही रहते हैं; बाद में सफेद हो जाते हैं।

कस्तूरा परिवार

कस्तूरा मीठी बोली बोलता है तथा पहाड़ों में रहता है। इस परिवार की दूसरी चिड़िया श्यामा है जो मैना की तरह पाली जाती है। श्यामा घने जंगलों में रहती है। यह सुबह शाम बड़े ही मीठे स्वर में बोलती है। दंहगल भी गाने के लिये प्रसिद्ध है। इस छोटे चितकबरे पक्षी को भी पाला जाता है। इसे न तो घने जंगलों में ही रहना पसंद है और न खुले मैदान में। यह तो बाग बगीचे में रहना पसंद करता है। थिरथिरा, पिद्दा आदि इस परिवार के और भी पक्षी हैं।

बुलबुल परिवार

बुलबुल को भला कौन नहीं जानता। इनकी अनेक जातियां हैं जिनमें गुलदुम सबसे प्रसिद्ध है। बुलबुल की बोली मीठी होती है; किन्तु केवल इसलिये ही इसे नहीं पाला जाता बल्कि इसके पाले जाने का मुख्य कारण इसकी लड़ने की आदत है।

चिलचिल परिवार

इस परिवार के प्राणियों में चिलचिलें, चरखियां आदि सम्मिलित हैं। इनका रंग मटमैला या गंदे किसम का चित्तेदार होता है। कद में ये कौए के बराबर होते हैं। चरखियां और सिबिया, अपने शोर मचाने के कारण प्रसिद्ध हैं। अधिकतर ये पेड़ों पर ही रहती हैं और दिन भर वहीं इधर से उधर फुदकती रहती हैं।

कठफोरिया परिवार

इस परिवार के पक्षियों का कठफोर से कोई संबंध नहीं है। कठफोरिया लकड़ी नहीं काटती बल्कि पेड़ की पपड़ियों से छोटे छोटे कीड़ों की तलाश में पेड़ का चक्कर लगाती रहती है।

गंगरा परिवार

इस परिवार के पक्षी अपने छोटे कद के कारण दूर से फुदकी जैसे दिखाई देते हैं। गंगरा पहाड़ों पर ही रहती है पर जाड़ों में इनके झुंड मैदानों में उतर आते हैं। गंगरा की शकल सूरत भी सुन्दर होती है और बोली भी प्यारी होती है।

काक परिवार

इस परिवार में कौए तो हैं ही, साथ में मुटरी और बनसरें भी सम्मिलित किये गय हें। ये सर्वभक्षी पक्षी हैं और प्रायः पेड़ों पर ही रहते हैं। इनकी बोली कर्कश होती है। बनसर्रा हमारे यहां का बारहमासी पक्षी है। इसके सिर की टोपी बुलबुलों की तरह काली और चोटीदार होती है। ठुड्ढी और गला काला होता है किन्तु बदन का रंग खैरा सिलेटी रहता है। दुम काली होती है। उस पर नीली धारियां रहती है, किन्तु सिरा सफेद होता है। मुटरी कौओं से मिलता-जुलता है। वह उन्हीं के समान चोर और चालाक होता है। मुटरी की दुम लम्बी होती है जिसके कारण यह जमीन पर नहीं बैठता। इसके नर और मादा दोनों एक शकल के होते हैं जिनका सिर, गरदन और सीना, काला तथा बाकी हिस्सा कत्थई होता है। पंख और दुम स्याही लिये हुये सफेद होते हैं जिनका आखिरी हिस्सा धुर काला होता है।

कौआ को तो हम भली भांति जानते हैं। इन्हें रोज ही अपने घरों में देखते हैं। पर इनकी आदतों की वजह से इन्हें पसंद नहीं करते। कौआ छोटा और बड़ा दो प्रकार का होता है। दोनों के रंग रूप में फर्क रहता है पर आदतें एक सी होती हैं।

सहायक ग्रन्थ

हिन्दी

सुरेशसिंह : जीव जगत

व्रजेश बहादुर : जंतु जगत

रमेश वेदी : सांपों की दुनियां

अंग्रेजी

सलीम अली : दि बुक आफ इंडियन वर्ड्स

प्रेटर, एस० एच : दि बुक आफ इंडियन एनीमल

जीवजगत के संबंध (वाईस, न्यूयार्क द्वारा निर्मित चार्ट)

चित्रफलक तीन

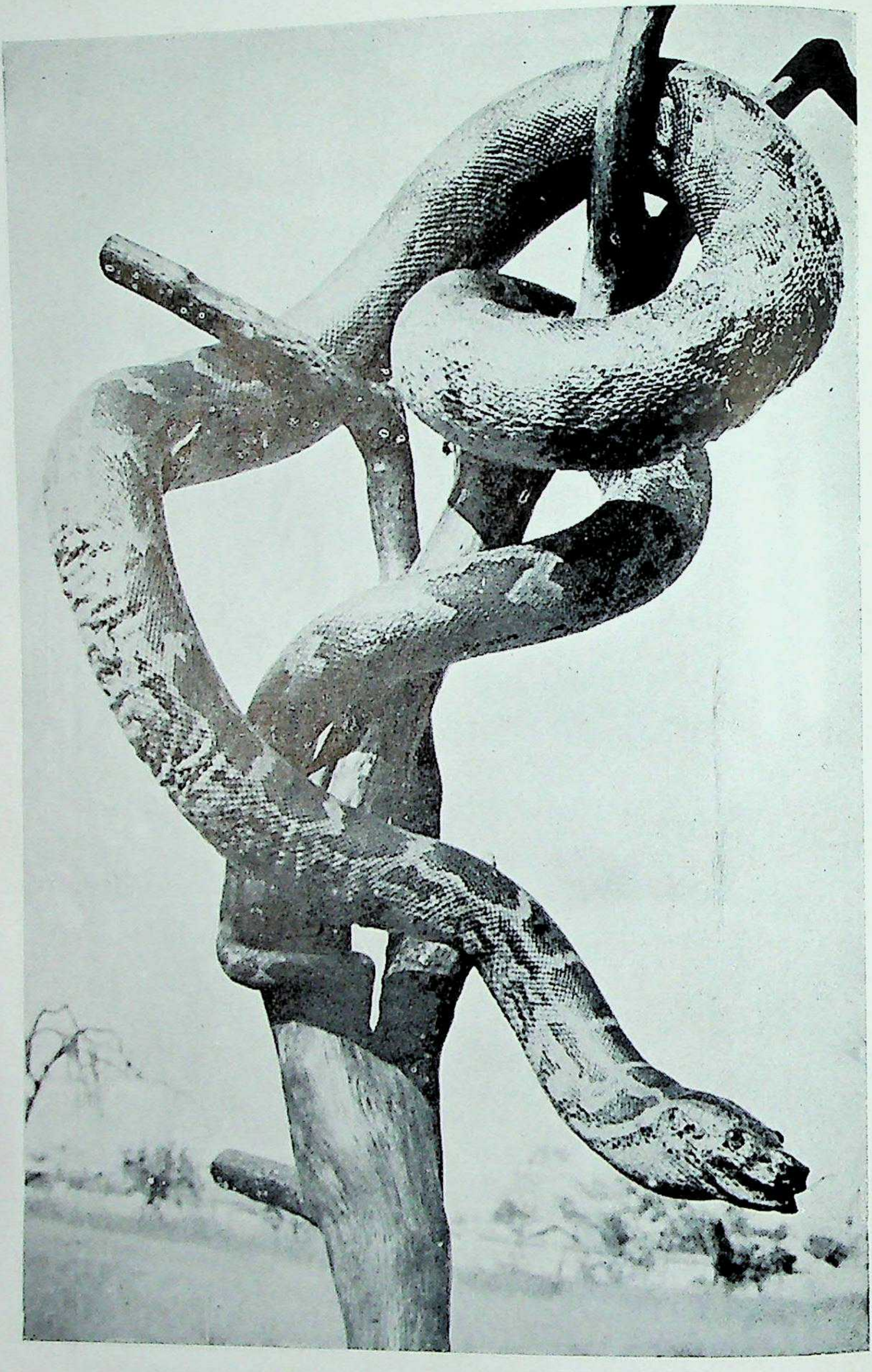

अजगर

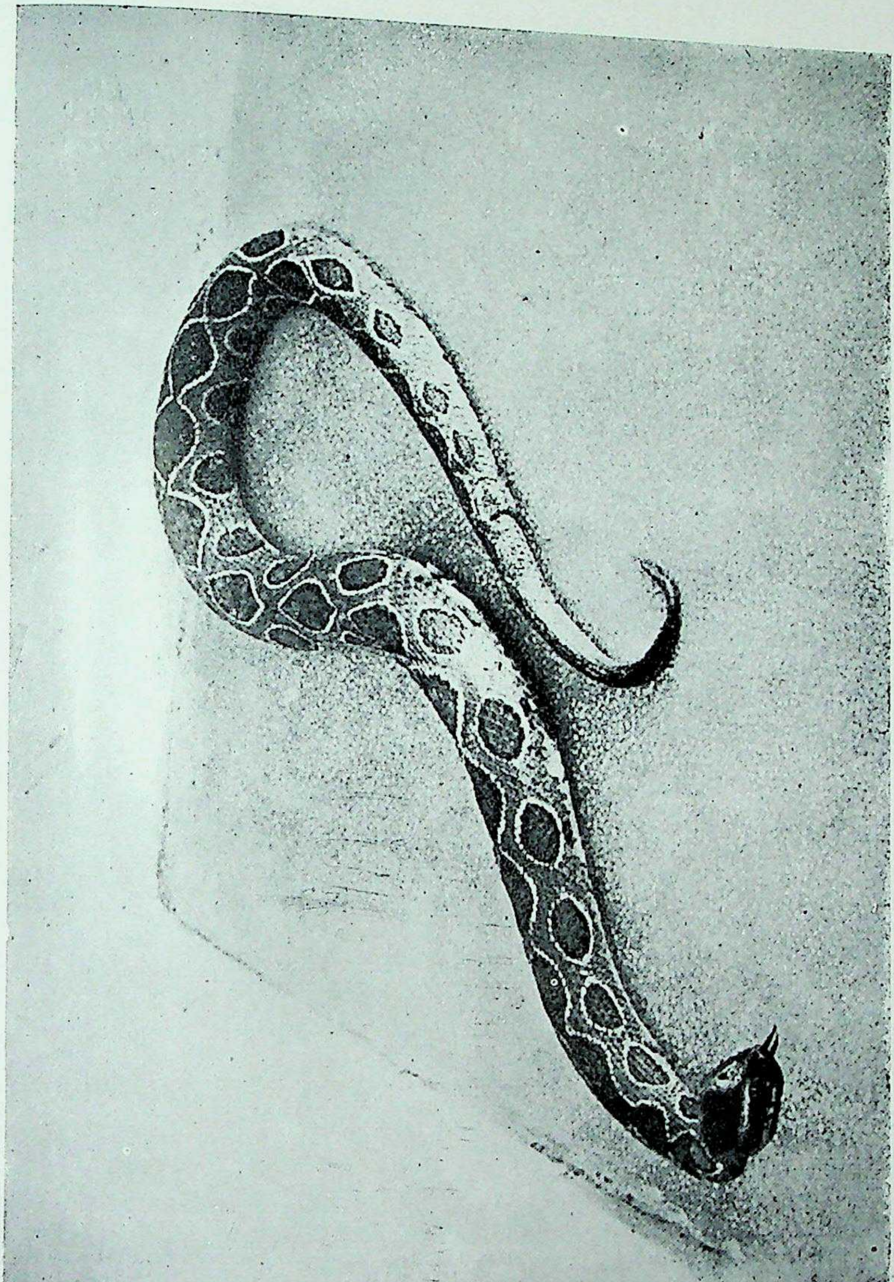

दुबोइया या कौड़िया सांप

चित्रफलक पांच

चीतल

कस्तूरी

चित्रफलक सात

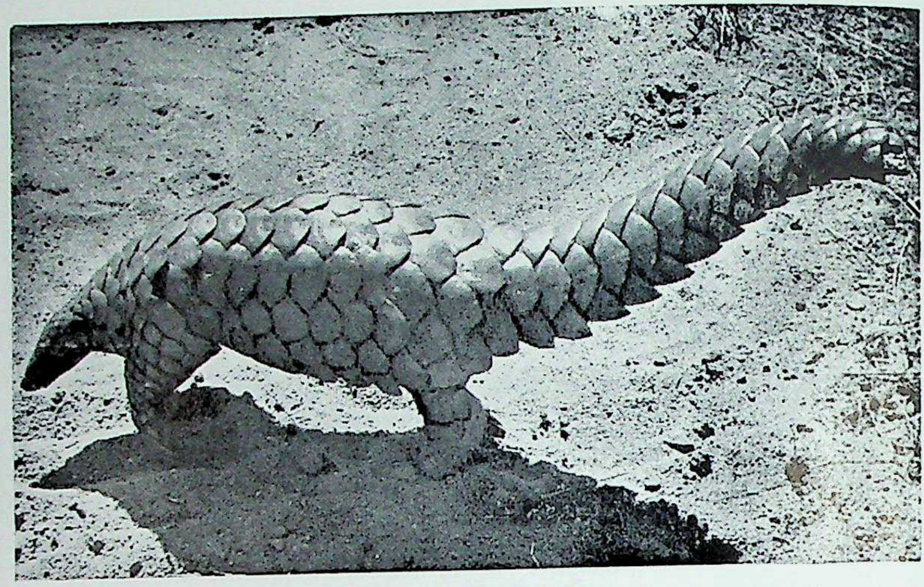

साल

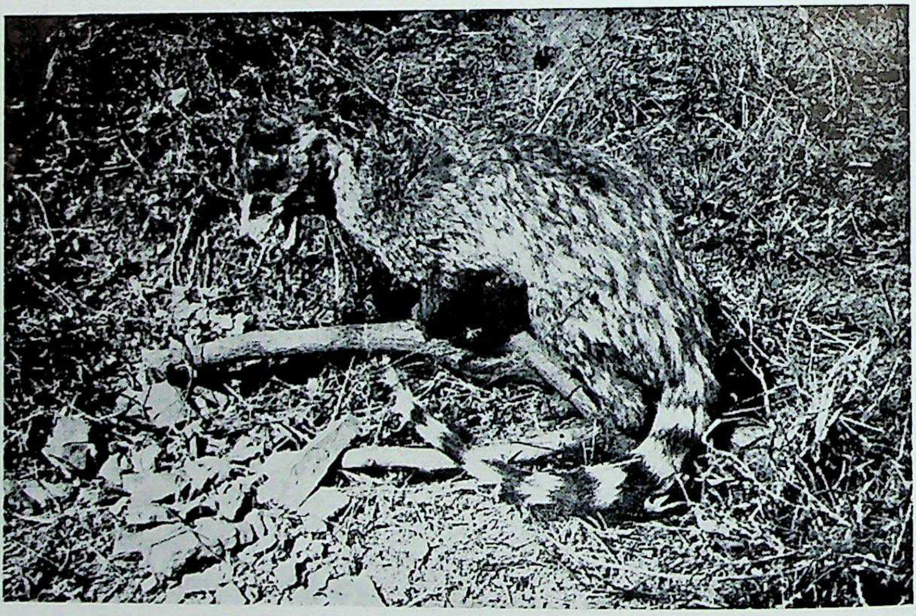

ऊद

पहाड़ी गिलहरी

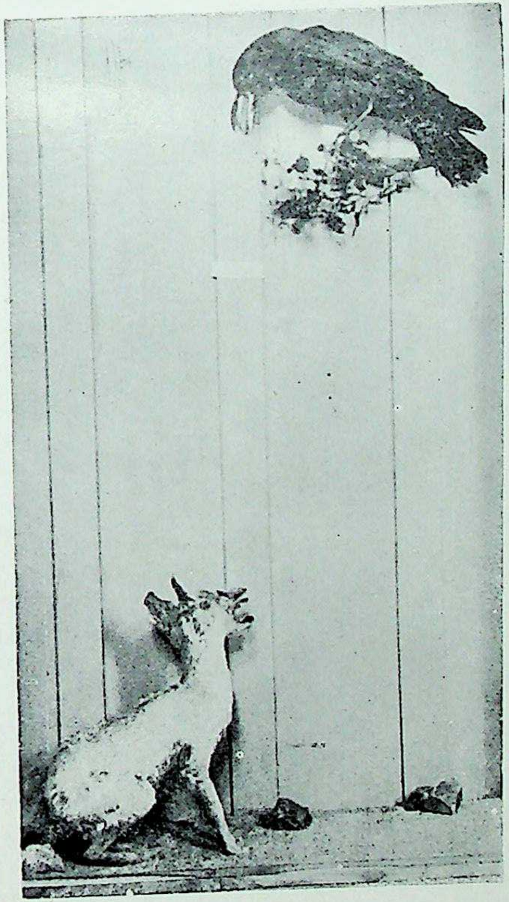

लोमड़ी और कौआ

चित्रफलक नौ

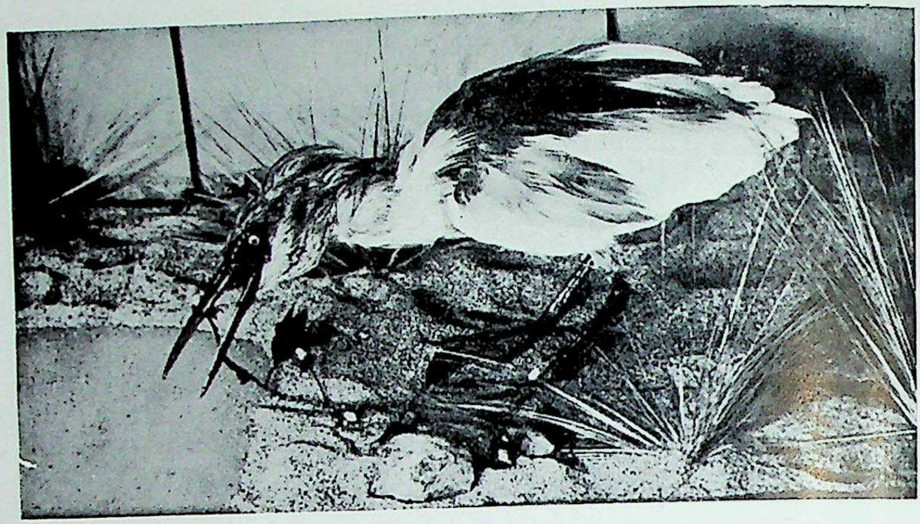

(क) अंधा बगुला

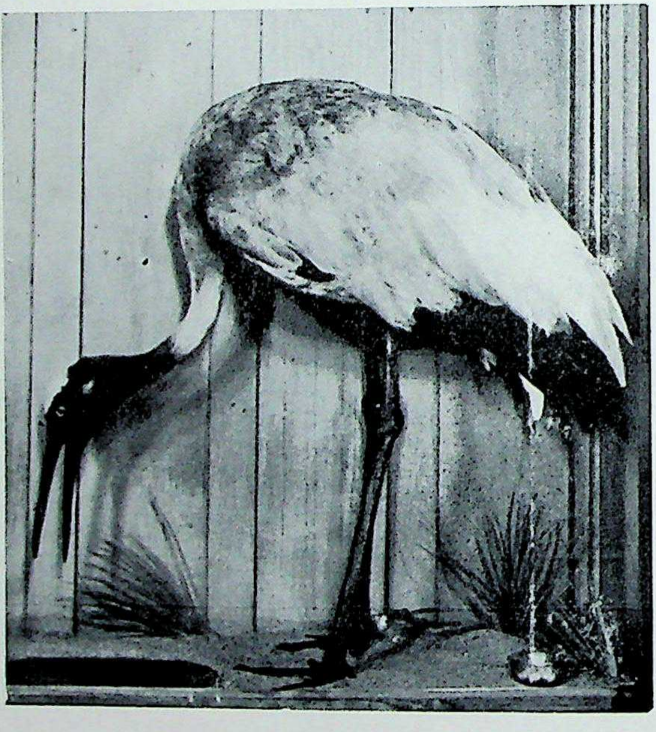

(ख) सारस

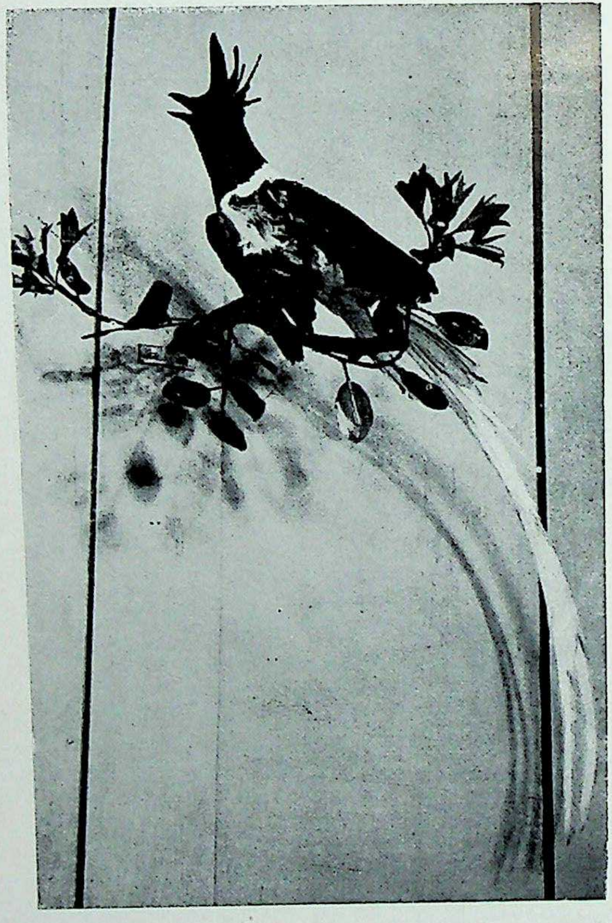

(क) शाह बुलबुल

(ख) हुदहुद

(क) संग्रहालय में प्रदर्शित
विभिन्न पक्षी-बीच में कोयल का जोड़ा

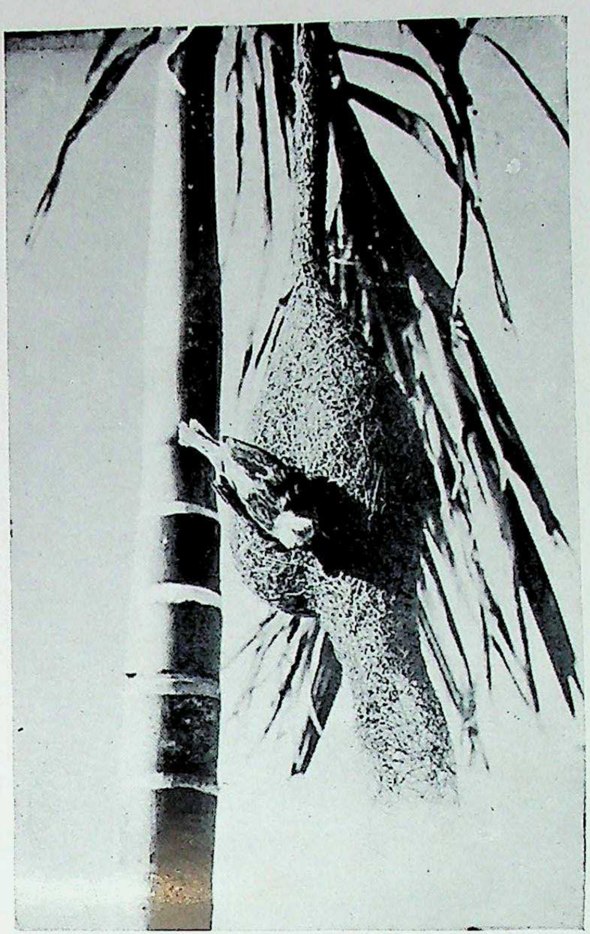

(ख) बया का घोंसला

संग्रहालय में प्रदर्शित गाने वाले भारतीय पक्षियों का चार्ट
श्यामा, हरेंवा, दयाल, चंडोल और लटोरा

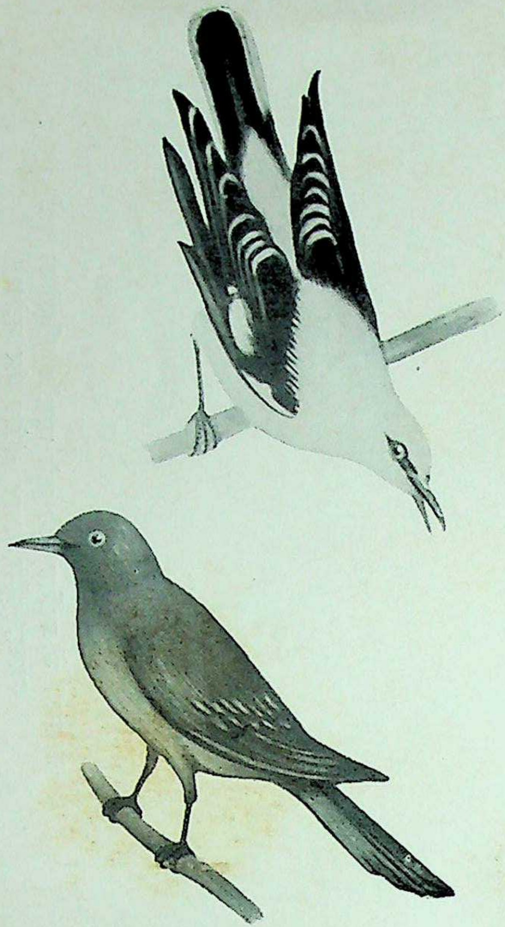

(क) पीलक का जोड़ा

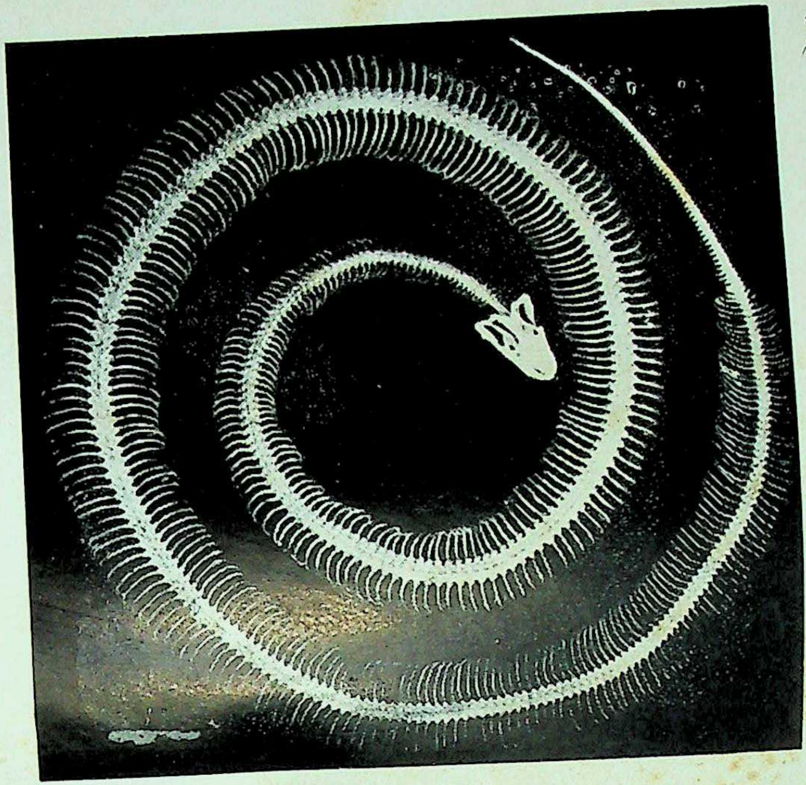

(ख) भारतीय अजगर का कंकाल
(टर्टॉक्स, चिकागो के कैटलाग से)

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, रायपुर

के

प्रकाशन

१. महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में सुरक्षित उत्कीर्ण लेखों की विवरणात्मिका सूची

२. लिस्ट ग्राफ क्वाइन्स डिपाजिटेड इन दि एम० जी० एम० म्यूजियम रायपुर (ग्रंग्रेजी)

३. महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय (उद्भव, इतिहास ग्रौर प्रवृत्तियां)

४. मानवशास्त्रीय उपविभाग प्रदर्शिका

५. प्रकृति इतिहास उपविभाग प्रदर्शिका

६. पुरातत्त्व उपविभाग प्रदर्शिका

७. पुरातत्त्व उपविभाग का सूचीपत्र भाग २, पाषाण प्रतिमाएं

८. पुरातत्त्व उपविभाग का सूचीपत्र भाग ३, धातु प्रतिमाएं

९. पिक्चर पोस्ट कार्ड (विभिन्न सेट)